छोटी कालज्ञानी

| **111** | एक एक एक की होरा कहती है कि पुत्र के लिये देव तथा पितृदोष है। |
| --- | --- |

| **112** | एक एक दो की होरा कहती है कि ऐसा लगता है कि देवता तथा भूत-प्रेत का प्रकोप है। |
| --- | --- |

| **113** | एक एक तीन की होरा कहती है कि देवी, क्षेत्रपाल तथा हत्या का दोष दिखाई देता है। |
| --- | --- |

| **114** | एक एक चार की होरा कहती है कि जलभूत और देवी का दोष है। |
| --- | --- |

| **121** | एक दो एक की होरा कहती है कि शंखिनी (दूसरे स्थान की देवी) की भोजन करते समय छाया पड़ी है। |
| --- | --- |

| **122** | एक दो दो की होरा कहती है कि भूख न लगने का कारण देवदोष है तथा किसी की कुदृष्टि पड़ी है। |
| --- | --- |

| **123** | एक दो तीन की होरा कहती है कि गृह में किसी की छाया पड़ी है तथा भूत-प्रेत और किंकिणी देवी का कोप है। |
| --- | --- |

| **124** | एक दो चार की होरा कहती है कि गृह में भूत की छाया पड़ी है तथा डाकिनी का दोष है। |
| --- | --- |

| **131** | एक तीन एक की होरा कहती है कि देवदोष तथा पितृदोष दिखाई देता है। |
| --- | --- |

| **132** | एक तीन दो की होरा कहती है कि शुभ स्थान या जल के स्थान पर छाया पड़ी है तथा स्वजाति के पितर का दोष है। |
| --- | --- |

| **133** | एक तीन तीन की होरा कहती है कि आपने कुल में किसी के प्रति कोई कपट किया है, उसी के कारण दुःख भोगना पड़ रहा है, अतः पितृदोष है। |
| --- | --- |

| **141** | एक चार एक की होरा कहती है कि शुभ स्थान के जल को अपवित्र करने के कारण जलदेवी कुपित है। |
| --- | --- |

| **142** | एक चार दो की होरा कहती है कि आपके सन्तान न होना, संतान का दुःखी होना या संतान से दुःखी होने का कारण देव तथा पितृदोष लगता है। |
| --- | --- |

| **143** | एक चार तीन की होरा कहती है कि भूत-प्रेत की छाया पड़ी है। जल के पास के इष्टदेव तथा जलदेव का कोप है। हत्या के कारण मन अशांत रहता है। |
| --- | --- |

| **144** | एक चार चार की होरा कहती है कि आपके पुत्र के लिये क्षेत्रपाल तथा कुलदेवी का दोष है। |
| --- | --- |

| **211** | दो एक एक की होरा कहती है कि शंखिनी और भूत-बेताल का कोप है तथा हत्या के कारण मन अशान्त है। |
| --- | --- |

| **212** | दो एक दो की होरा कहती है कि अपने सम्बंधी के साथ कलह होने से गृह में अशान्ति है। |
| --- | --- |

| **213** | दो एक तीन की होरा कहती है कि क्षेत्रपाल का कोप दिखाई देता है। |
| --- | --- |

| **214** | दो एक चार की होरा कहती है कि गरीब या निम्न जाति के लोगों को दुःखी करने के कारण चण्डिका देवी कुपित है। |
| --- | --- |

| **221** | दो दो एक की होरा कहती है कि नीच जाति के व्यक्ति को पीड़ित करने के कारण गृह देवता कुपित है। |
| --- | --- |

| **222** | दो दो दो की होरा कहती है कि अपने कुल के किसी व्यक्ति को दुःखी करने के कारण नगरकोट की देवी दुर्गा कुपित है। इस कारण गृह में धन-धान्य की हानि तथा सन्तान दुःख है। |
| --- | --- |

| **223** | दो दो तीन की होरा कहती है कि अपने परिवार में ही किसी की हत्या करने के कारण उसके प्रेत बनने से आपके परिवार तथा गृह पर उसका कोप है। |
| --- | --- |

| **224** | दो दो चार की होरा कहती है कि तीर्थस्थल के पास डाकिनी की कुदृष्टि पड़ने से और कुलदेवता के दोष तथा पितृ कोप के कारण कष्ट उठाना पड़ रहा है। |
| --- | --- |

| **231** | दो तीन एक की होरा कहती है कि देवता, भूत-प्रेत, इष्ट के कोप के कारण सन्तान का दुःख है। |
| --- | --- |

| **232** | दो तीन दो की होरा कहती है कि चण्डिका देवी तथा देवता का कोप है। |
| --- | --- |

| **233** | दो तीन तीन की होरा कहती है कि कन्या की हत्या के कारण गृह में अशान्ति है। |
| --- | --- |

| **234** | दो तीन चार की होरा कहती है कि तीर्थस्थल में जल के पास ब्रह्महत्या की गई है। |
| --- | --- |

| **241** | दो चार एक की होरा कहती है कि क्षेत्रपाल के स्थान या बावली या कुएँ के पास छाया पड़ी है। |
| --- | --- |

| **242** | दो चार दो की होरा कहती है कि दूसरे स्थान के देवता का दोष है। कलह करके किसी के घर की भूमि हड़पने से शत्रु के इष्ट का कोप है। |
| --- | --- |

| **243** | दो चार तीन की होरा कहती है कि निःसंतान को दुःखी करने के कारण दुःख भोगना पड़ सकता है, जिसका उपचार नवग्रह की पूजा करने पर भी नहीं है। |
| --- | --- |

| **244** | दो चार चार की होरा कहती है कि निःसंतान को दुःख पहुँचाने से देवता कुपित हैं तथा ग्रह भी खराब हो सकते हैं। |
| --- | --- |

| **311** | तीन एक एक की होरा कहती है कि कुलदेवता तथा इष्ट के कोप से कार्यों में बाधाएँ पड़ी हैं। |
| --- | --- |

| **312** | तीन एक दो की होरा कहती है कि डाकिनी की छाया, देवता का कोप है तथा नीच जाति के इष्ट का कोप है। |
| --- | --- |

| **313** | तीन एक तीन की होरा कहती है कि नागदेवता की हत्या तथा स्त्री हत्या के कारण देवी का दोष लगा है। |
| --- | --- |

| **314** | तीन एक चार की होरा कहती है कि डाकिनी का कोप है। किसी की हत्या के कारण देवता कुपित है। |
| --- | --- |

| **321** | तीन दो एक की होरा कहती है कि परदेसी की हत्या तथा दूसरी जाति के व्यक्ति की हत्या के कारण पितृदोष लगा है। |
| --- | --- |

| **322** | तीन दो दो की होरा कहती है कि जल में किसी की हत्या होने के कारण भूत-प्रेत का कोप है। |
| --- | --- |

| **323** | तीन दो तीन की होरा कहती है कि आपके घर में देवता का कोप है। |
| --- | --- |

| **324** | तीन दो चार की होरा कहती है कि आपको कर्मों का फल भोगना पड़ रहा है। क्षेत्रपाल तथा कुलदेवता का दोष है। |
| --- | --- |

| **331** | तीन तीन एक की होरा कहती है कि आपको बुरे कर्मों का फल भोगना पड़ रहा है। |
| --- | --- |

| **332** | तीन तीन दो की होरा कहती है कि गृह में देवी चण्डी का दोष है तथा पितृदोष भी है। |
| --- | --- |

| **333** | तीन तीन तीन की होरा कहती है कि जिस घर में आप रह रहे हैं वह आपके लिये ठीक नहीं है। अतः शारीरिक कष्ट उठाना पड़ रहा है। |
| --- | --- |

| **334** | तीन तीन चार की होरा कहती है कि डाकिनी, जलदेवी तथा सूर्य देवता का कोप है। |
| --- | --- |

| **341** | तीन चार एक की होरा कहती है कि बीमार सम्बंधी की सेवा न करने से हुई उसकी मृत्यु के कारण पितृदोष लगा है। |
| --- | --- |

| **342** | तीन चार दो की होरा कहती है कि ब्रह्महत्या के कारण पितृदोष लगा है। |
| --- | --- |

| **343** | तीन चार तीन की होरा कहती है कि इष्ट देव का कोप है। जल में किसी की मृत्यु होने के कारण पितृदोष लगा है। |
| --- | --- |

| **344** | तीन चार चार की होरा कहती है कि महादेवी चण्डी का कोप है। |
| --- | --- |

| **411** | चार एक एक की होरा कहती है कि गृह में आग लगने से हुई जीवहत्या से पितृदोष दिखाई देता है। |
| --- | --- |

| **412** | चार एक दो की होरा कहती है कि ब्रह्महत्या के कारण पितृदोष तथा कुलदेवता को न पूजने के कारण देवता का कोप लगा है। |
| --- | --- |

| **413** | चार एक तीन की होरा कहती है कि घर पर कुदृष्टि पड़ने से संतान दुःख है। |
| --- | --- |

| **414** | चार एक चार की होरा कहती है कि कुल में किसी के द्वारा आत्महत्या किये जाने के कारण पितृदोष तथा देवदोष दिखाई देता है। |
| --- | --- |

| **421** | चार दो एक की होरा कहती है कि आपको शंखिनी देवी, इष्ट तथा चण्डी देवी का दोष लगा है। |
| --- | --- |

| **422** | चार दो दो की होरा कहती है कि आप पर किसी की कुदृष्टि पड़ी है तथा पितृदोष के कारण गृह में अशांति फैली है। |
| --- | --- |

| **423** | चार दो तीन की होरा कहती है कि आपके कुल का धर्म भ्रष्ट होने से घर में व्याधि फैली है। |
| --- | --- |

| **424** | चार दो चार की होरा कहती है कि आपको किसी ने विष खिलाया है जिस कारण आपको पीड़ा रहती है। इष्ट के कोप से भी पीड़ा हो सकती है। |
| --- | --- |

| **431** | चार तीन एक की होरा कहती है कि किसी निम्न जाति की निःसंतान स्त्री की छाया पड़ने तथा देवी का कोप होने से कष्ट प्राप्त हो रहा है। |
| --- | --- |

| **432** | चार तीन दो की होरा कहती है कि शंखिनी देवी तथा क्षेत्रपाल का दोष है। |
| --- | --- |

| **433** | चार तीन तीन की होरा कहती है कि किसी स्त्री की कुदृष्टि पड़ने से कष्ट उत्पन्न हुआ है, जिसका निवारण देवी की पूजा है। |
| --- | --- |

| **434** | चार तीन चार की होरा कहती है कि किसी की कुदृष्टि पड़ने से कुल में जिसकी मृत्यु हुई है, उसका पितृदोष है। |
| --- | --- |

| **441** | चार चार एक की होरा कहती है कि देवता तथा भूत के प्रकोप के कारण गृह में अशान्ति रहती है। |
| --- | --- |

| **442** | चार चार दो की होरा कहती है कि ब्रह्महत्या दोष, देवदोष तथा पितृदोष है। |
| --- | --- |

| **443** | चार चार तीन की होरा कहती है कि शंखिनी देवी का कोप है। |
| --- | --- |

| **444** | चार चार चार की होरा कहती है कि कुलदेवता का कोप है। निवारण हेतु कुलदेवता की पूजा करें। |
| --- | --- |

बड़ी कालज्ञानी होरा

| **111** | एक एक एक की होरा कहती है कि आपको पुत्रलाभ और धनलाभ होगा। अपने इष्ट देवता से भी शुभ फल प्राप्त होगा। सब प्रकार के सुख मिलेंगे। आपका हर प्रकार से कल्याण होगा लेकिन मन में दुविधा होने से तीन वर्ष से दुःस्वप्न आते हैं। स्थानीय देवी भी कहती है कि आपका मंगल होगा। अर्थ सम्पत्ति का लाभ दिखाई देता है। शनि की दशा सहित चैत्र मास से श्रावण मास तक किसी एक नक्षत्र में अल्पमृत्यु के योग बनते हैं। |
| --- | --- |

| **112** | एक एक दो की होरा कहती है कि आपकी भूमि का कोई हिस्सा जाएगा लेकिन अर्थ सम्पत्ति का लाभ है। हानि होने के योग भी दिखाई दे रहे हैं। शारीरिक पीड़ा, विघ्न बाधा हो सकती है। अगला समय कठिनाई से युक्त दिखाई देता है। उसके बाद लाभ होगा। मन में संतोष रखें। दो साल के बाद आपको शुभ फल प्राप्त होगा। शुक्ल पक्ष की पंचमी, संक्रान्ति के दिन, भाद्रपद मास और कृष्णपक्ष की पंचमी, रेवती नक्षत्र, बुधवार तक आपको हानि के योग हैं। |
| --- | --- |

| **113** | एक एक तीन की होरा के अनुसार स्थानीय देवी कहती है कि अर्थ सम्पत्ति का नाश भाग्य के अनुसार हो रहा है। अगले मास तीर्थ यात्रा के योग हैं। उसके बाद शनि की दशा आरम्भ होगी। उसमें आत्महत्या का योग है। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष में इसका भय है। स्थानीय देवी पुनः कहती है कि आपको किसी भी कार्य से लाभ होगा। पैंतीस वर्ष की आयु में धनलाभ होगा। सत्तर वर्ष की आयु में अकस्मात् मृत्यु के योग हैं। शुभ कर्म करने से आपकी आयु सौ वर्ष हो सकती है। |
| --- | --- |

| **114** | एक एक चार की होरा के अनुसार मंगल देवता कहता है कि आपकी कुल वृद्धि होगी। आपका कल्याण होगा। सब व्याधियों से मुक्त होंगे। धन आदि का लाभ होगा। भूमि लाभ होगा। ब्राह्मण के द्वारा शत्रु के साथ संधि होगी। सभी कुयोग समाप्त होंगे। स्थानीय देवी कहती है कि पशु हानि होगी, कार्य में विघ्न-बाधाएँ आयेंगी और बन्धु के द्वारा अर्थ सम्पत्ति की हानि दिखाई देती है। कुल वृद्धि होगी। उसके बाद उद्वेग पैदा होने के तथा मृत्यु के योग दिखाई देते हैं। 55 वर्ष की आयु में असौज मास के कृष्ण पक्ष की पंचमी, रेवती नक्षत्र, बुधवार के दिन अर्थ सम्पत्ति का विनाश होगा। |
| --- | --- |

| **121** | आपके गृह पर भूत-प्रेत की कुदृष्टि पड़ी है जिससे अर्थ सम्पत्ति का नाश हो रहा है और दुःस्वप्न दिखाई देते हैं। आपको अर्थ चिन्ता रहती है। कुल में किसी प्रकार की हानि होगी। पिछले एक मास से आपको कष्ट उत्पन्न हुआ है जो पचीस वर्ष तक रहेगा। इन पचीस वर्षों के भीतर अल्प मृत्यु का योग है। फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष, आर्द्रा नक्षत्र में मृत्यु होगी, इसमें कोई संशय नहीं है। |
| --- | --- |

| **122** | पाँचाली देवी कहती है कि आपको अन्न-धन की वृद्धि होगी और आपका हर प्रकार से कल्याण होगा। शंकर भगवान् की पूजा करें जिससे विष का अमृत होगा अर्थात् बिगड़े काम भी बनेंगे। शत्रु का नाश होगा। भगवती देवी कहती है कि भविष्य में अर्थ सम्पत्ति किसी भी स्रोत से प्राप्त होगी। उसके बाद कुछ अरिष्ट के योग हैं जो मृत्यु तुल्य हैं लेकिन आपके कर्मानुसार आपकी आयु सौ वर्ष की है। |
| --- | --- |

| **123** | (7) आपके कार्य में विघ्न दिखाई देता है। आपका बन्धु के साथ विरोध होगा और मुकदमेबाजी चलेगी। परिवार में विरोध होगा। सज्जनों से मेल व अर्थ लाभ दिखाई देता है। बन्धु का शाप लगा है। स्थानीय देवी कहती है कि इसके बाद आपको अर्थ लाभ होगा। इष्ट से सुख मिलेगा। पितृ दोष भी है। पराए कार्य के कारण वाद-विवाद होने से दूसरे की बद्दुआ लगी है। 70 वर्ष की आयु तक जीवित रहेंगे। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, शनिवार की अर्धरात्रि को अकस्मात् मृत्यु का योग है । |
| --- | --- |

| **124** | (8) होरा कहती है कि आपने देवता की मनौती की थी, जिसे पूरा नहीं किया गया है। इस कारण आपके घर में अशांति फैली हुई है, जिसे दूर करना इतना कठिन है जितना इकट्ठे हुए तिल और उड़द को अलग करना । आपका मन विचलित है इसलिये विघ्न बाधाएँ आ रही हैं। वैसे आपका भाग्योदय होने जा रहा है । आपका शुभ कार्य सात वर्ष के अन्दर पूरा होगा I कार्य की वृद्धि होगी । अहंकार छोड़ दो। धर्म कर्म करने पर पचपन वर्ष में आपका पुनः भाग्योदय होगा । कलह छोड़ दो। कार्य सिद्ध होगा । आप अपने कर्म से आज से सात वर्ष के अन्दर आषाढ़ मास और भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि, विशाखा नक्षत्र को अत्यधिक शुभ फल प्राप्त करोगे । |
| --- | --- |

| **131** | (9) आपके घर में शुभ कार्य होगा। आपके घर में जो क्लेश है, उसका आपने समाधान कर दिया है। आपके घर में पुत्र जन्म होगा। हर प्रकार की सम्पत्ति का लाभ भी हुआ है। लेकिन स्थानीय देवी कहती है कि कुछ दिनों के बाद आपको अर्थ सम्पत्ति की हानि हो सकती है। आप चण्डी देवी का पाठ करवाएँ जिससे आपकी रक्षा होगी। इससे आपकी आयु सतहत्तर वर्ष की हो सकती है। पौष मास की सप्तमी तिथि, उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र, मंगलवार का दिन मारक हो सकता है। ऐसा विचार किया जाता है कि आपको सपने में बहुत व्यक्तियों के दर्शन हुए जो अपशकुन है । |
| --- | --- |

| 132 | (10) एक तीन दो की होरा कहती है कि आपने परिजनों से विरोध किया है, जिससे दुःस्वप्न आते हैं और भारी कष्ट के लक्षण दिखाई देते हैं। आपके घर में पितर है जिसकी आप ठीक प्रकार से पूजा नहीं करते हैं। आप मन में शांति लाएँ और लक्ष्मी तथा गणेश का पूजन करें, क्योंकि गणेश जी का कोप दिखाई देता है । आप संकल्प करें कि मैं देव व पितर की पूजा करूँगा जिससे मेरी मनोकामना पूर्ण हो तथा अकस्मात् मृत्यु टल जाए। ज्येष्ठ मास, श्रवण नक्षत्र, शनिवार के दिन आपकी सौ वर्ष की आयु पूर्ण होगी। |
| --- | --- |

| **133** | एक तीन तीन की होरा कहती है कि आपके घर में अकस्मात् अर्थ हानि होगी। आपके शत्रु ने आपके घर में कोई जादू-टोना किया है जो आपके लिये प्राणघातक है। आप इस जादू का उपाय करें तब आपको अन्न-धन का लाभ होगा। इष्ट की पूजा करें तो शुभ होगा। भगवती देवी कहती है कि अगर आप इस कार्य में ढील देंगे तो पचपन वर्ष की आयु में आपकी कहीं भी मृत्यु हो सकती है। ज्येष्ठ नक्षत्र, चैत्र मास की सप्तमी तिथि, रविवार के दिन अपने कर्म से साठ वर्ष में आपकी आयु पूर्ण होगी। अगर आप सत्कर्म करेंगे तो आप इससे अधिक आयु भी पा सकते हैं। |
| --- | --- |

| **134** | 134 (12) एक तीन चार की होरा कहती है कि आपको जिस दोष का संदेह है उसका समाधान करें तो राजदरबार आदि से लाभ होगा। संतान लाभ होगा। आप पितृ पूजा करें। बन्धु द्वारा \* नीचकर्म का प्रेत लगाया गया है। उसका उपाय करें तो आपको बन्धु व मित्रों से अर्थ- सम्पत्ति, धन-धान्य और भूमि का लाभ होगा। ऐसा करने पर हस्त नक्षत्र, पौष मास की पंचमी तिथि, शनिवार तक एक सौ पाँच वर्ष की आयु पा सकते हैं। |
| --- | --- |

| **141** | 141 (13) एक चार एक ही होरा कहती है कि आपका मित्रों से वैर है, जिससे आपको हर प्रकार की हानि होती है। सरकार से आपको बहुत लाभ होगा। किसी दिशा से आपको मित्रों का शाप पड़ा है जिससे आपकी हानि होती है। सत्तर वर्ष की आयु तक आपका जीवन क्लेश रहित और सुख पूर्वक बीतेगा। इसके पश्चात् आपको अष्टम चन्द्रमा आदि ग्रह की खराब दशा रहेगी। क्रिया देवी कहती है कि पूजा करने से अर्थ सम्पत्ति का लाभ, व्याधि नाश, रोग मुक्ति और बन्धु जनों का शाप दूर होगा। आगे शुभ दिखाई देता है। |
| --- | --- |

| **142** | 142 (14) स्थानीय देवी कहती है कि आपको धन-धान्य व पुत्र लाभ होगा। लेकिन परिजनों से भय है। परिजनों से मेल रखने से घर में धन की वृद्धि होगी, इसमें संदेह नहीं है। विष्णु भगवान् पूजा करने से वस्त्र और स्वर्ण की प्राप्ति होगी। सब सुख भोगने के बाद आपकी मुक्ति होगी । स्थानीय देवी पुनः कहती है  कि परिजनों से मेल न करने पर आप सुख खोकर अल्पमृत्यु पाएँगे। बुधवार, दशमी तिथि, विशाखा नक्षत्र तक पचास वर्ष की ही आयु पा सकते हैं । |
| --- | --- |

| **143** | एक चार तीन की होरा के अनुसार स्थानीय देवी कहती है कि आपको केवल कन्या का ही लाभ है, बाकी सब प्रकार की हानि है। आपको दुःस्वप्न आते हैं। आपका अपनी पत्नी से वाद-विवाद रहता है, जिससे आपकी पत्नी दुःखी रहती है। आपको धन का अहंकार है। आपको स्वप्न में बहुत लोग दिखाई देते हैं, यह अपशकुन है। आपका जीवन सौ वर्ष तक है जो श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि, संक्रान्ति के दिन स्वाति नक्षत्र में पूर्ण हो जाएगा। |
| --- | --- |

| **144** | एक चार चार की होरा कहती है कि आपने कुलदेवता के जागरण में कुटुम्बियों सहित वाद-विवाद किया है, जिससे आपको तथा आपके कुटुम्बियों को स्वप्न में चिन्ता रहती है। इससे आपको बहुत कष्ट मिलेगा। धन धान्य का नाश होगा। इसके बाद आप सर्व सुख सम्पन्न होंगे तथा शत्रु का नाश होगा। यह योग कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी व संक्रान्ति के दिन आपके अपने कर्म से उदित होगा। |
| --- | --- |

| **211** | दो एक एक की होरा कहती है कि आपको स्वप्न में धन और अर्थ लाभ दिखाई देता है, जो कि आपके लिये हानिकारक है। आपके घर पर किसी की कुदृष्टि पड़ी है। आपका इष्ट.भी रुष्ट दिखाई देता है, जिससे कार्य में विघ्न पड़ता है। आपके घर में पितर दोष है, क्योंकि आपने उनकी ठीक से पूजा नहीं की है। भगवती देवी कहती है कि आपको अर्थ लाभ, कन्या लाभ हुआ है और पुत्र को व्याधि उत्पन्न होती है। आप देवी चण्डिका तथा कुल देवता का पूजन करें, जिससे आपके सौभाग्य की वृद्धि होगी। जिसका समय आश्विन मास शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, बुधवार के दिन से आरम्भ होगा। |
| --- | --- |

| **212** | आपने कुल देवता की जो मनौती रखी है उसे स्थिर मन से नहीं रखा है, जिससे आपको महाकष्ट, अशान्ति रहती है और व्याधि ग्रस्त रहते हैं। ये सभी कष्ट और अन्न-धन का नाश होगा। इसके बाद आप सर्व सुख सम्पन्न होंगे तथा शत्रु का नाश होगा। यह योग कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी व संक्रान्ति के दिन आपके अपने कर्म से उदित होगा।विनाश इस कारण हुआ है। यह कष्ट आपको पाँच वर्ष से है। आप इसका उपाय करें तो शुभ होगा। मन में दुविधा है। आपको विदेश गमन, तीर्थाटन, धन लाभ के योग हैं। मित्र से मिलाप होगा। आप माघ मास में देवता की पूजा करें तो आपके सिद्धि के योग कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष की पंचमी तिथि, आर्द्रा नक्षत्र, रविवार के दिन दिखाई देते हैं। |
| --- | --- |

| **213** | दो एक तीन की होरा कहती है कि आपका भाग्योदय हुआ है, जिससे धन-धान्य की वृद्धि और सुख की प्राप्ति होगी। उमा देवी कहती है कि सत्कर्म करने से वस्त्र तथा कन्या लाभ होगा और मन में सोचे कार्य की सिद्धि होगी, इसमें कोई सन्देह नहीं है। देवी तथा सप्तमातृका की पूजा करें। शोषणी देवी कहती है कि आपके घर में पितर दोष है, जिससे आपको शारीरिक कष्ट रहता है। आषाढ़ मास में आपके भाग्योदय के लक्षण दिखाई देते हैं। पचहत्तर वर्ष की आयु में चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि, बुधवार, अश्लेषा नक्षत्र में अल्पमृत्यु के योग पाए जाते हैं। यदि आप सत्कर्म करेंगे तो आप सौ वर्ष तक जीवित रह सकते हैं। |
| --- | --- |

| **214** | दो एक चार की होरा कहती है कि आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। इसमें कोई संदेह नहीं, ऐसा बलभद्र जी कहते हैं। आपको कार्य के बारे में चिंता रहती है। आप अहंकार न करें तो सुख प्राप्त होगा और विजय प्राप्त होगी। चार स्वजनों सहित शुद्ध मन से अपने कुल देवता व देवी का पूजन करें तो आपका कार्य सिद्ध होगा। सप्तमातृका का पूजन करें और उसके प्रति की गई मनौती को पूरा करें। वाग्भवानी कहती है कि आपका कष्ट निवारण होगा, कार्य पूर्ण होंगे, पुत्र लाभ होगा, व्याधि का विनाश होगा और धन लाभ होगा। आपको स्वप्न में बहुत आदमी दिखाई दिये जो अपशकुन है। किसी ने आपके सत्कर्म में बाधा डालने के लिये रविवार के दिन आप पर जादू किया है। चैत्र मास की अष्टमी तिथि, मूल नक्षत्र, रविवार के दिन अर्धरात्रि को आपकी अल्पमृत्यु हो सकती है। |
| --- | --- |

| **221** | दो दो एक की होरा कहती है कि मन चंचल होने के कारण वर्तमान में आपका कार्य ढीला दिखाई देता है और आप ​​सभी ओर से दुःखी हैं। पिछले तीन वर्ष में आज तक आपका भाग्य अच्छा था परन्तु आगे का समय अग्निदाह के बराबर बीतेगा। ब्राह्मण की पूजा करें, उसकी शरण में जाएं और उनको भोजन और दक्षिणा आदि से संतुष्ट करें। भगवती देवी कहती है कि आपको राज दरबार से लाभ होगा। अच्छे कर्म करने से एक वर्ष के भीतर शुभ फल की प्राप्ति होगी। यदि आप सत्कर्म नहीं करेंगे तो पौष मास, मूल नक्षत्र की अर्धरात्रि को अल्पमृत्यु हो सकती है। |
| --- | --- |

| **222** | दो दो दो की होरा कहती है कि आपके घर में विवाद होने से अर्थ सम्पत्ति का नाश होता है और स्त्री की ओर से चिंता रहती है, जिससे स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। हर किसी से शत्रुता मोल लेने से आपके बन्धुओं को भी परेशानी होती है। गृहपूजन करें। बन्धुओं से विरोध न करें तो अर्थ लाभ होगा। अहंकार न करें तो पुत्रलाभ होगा। अपने कुल देवता व चण्डी देवी की पूजा करें जिससे शनिग्रह की पीड़ा और अल्पमृत्यु का परिहार होगा। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष, रविवार के दिन पुत्र की वृद्धि होगी और अगला समय सुख से व्यतीत होगा। |
| --- | --- |

| **223** | दो दो तीन की होरा कहती है कि आपका संचित धन और अर्थ इस प्रकार नष्ट हो रहा है जिस प्रकार पानी की लकीर खींचते-खींचते ही सूख जाती है। आपके घर में भूत-प्रेत का प्रकोप है। आप ब्राह्मण को बुलाकर उपाय करें ताकि हानि न हो, जिससे आपके मन में संतोष रहेगा। व्याधि दूर होगी और अर्थ लाभ होगा। पितृ पूजन भी करें। मन तथा कर्म से किसी का बुरा न करें तभी सुख मिलेगा। अन्न की चिंता तथा भय दूर होगा। |
| --- | --- |

| **224** | आप पर किसी की कुदृष्टि पड़ी है जो अहर्निश आपके ऊपर है। भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि में इसका उपाय करें तो कार्य सिद्ध होगा और संतोष मिलेगा। आपको किसी का श्राप लगा है, जिससे आपकी स्त्री को पीड़ा रहती है। आप अपने घर में पितृ तथा कुलदेव की पूजा करें। सप्तमातृकाओं का भी पूजन करें तो मन को संतोष होगा। मालिनी देवी कहती है कि आपका भाग्य उदय हुआ है। आपको साठ साल की आयु में पुत्र का सुख मिलेगा। आषाढ़ मास की त्रयोदशी तिथि, ज्येष्ठ नक्षत्र में आपको सुख प्राप्ति के योग हैं। |
| --- | --- |

| **231** | विष्णु देवता कहता है कि आपको सत्कर्म करने से अर्थ लाभ होगा और सरकार से लाभ प्राप्त होगा। कुल की वृद्धि होगी तथा महासुख प्राप्त होगा। आज से आठ साल बाद कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि, भरणी नक्षत्र को विदेश यात्रा के योग हैं लेकिन आपके कुल को अर्थ सम्पत्ति की हानि के योग भी दिखाई देते हैं। आठ साल बाद ज्येष्ठा नक्षत्र और शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि, मंगलवार को मृत्यु योग भी पाए जाते हैं इसलिये यात्रा न करें। |
| --- | --- |

| **232** | मंगल देवता कहता है कि आपको धन सम्पत्ति का लाभ है लेकिन गृहदोष, व्याधि, अर्थ हानि, शत्रुभय और अमृत की जगह विष के योग, शनि ग्रह की कुदृष्टि भी है। सावन मास के शुक्ल पक्ष में अपने कर्म के अनुसार अर्थ हानि, पुत्र विरोध और जीवन को कष्ट भी हो सकता है। मंगल देवता कहता है कि आपको बुरे स्वप्न और केतु ग्रह दोष से अल्प मृत्यु के योग पाए जाते हैं। आपको सौ वर्ष की उम्र में श्रावण मास शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि, रविवार के दिन शत्रु पीड़ा पहुँचाएँगे। आपके कुल की वृद्धि होगी। सत्कर्म से पुत्र लाभ और धन की वृद्धि होगी, जिससे आप सुख सम्पन्न होंगे। |
| --- | --- |

| **233** | दो तीन तीन की होरा कहती है कि आपके परिवार को सुख-सम्पत्ति के योग हैं और आपको अपने कर्म से धन-सम्पत्ति की वृद्धि होगी। आज से पाँच साल बाद आपको भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि, ज्येष्ठा नक्षत्र को अत्यधिक लाभ होगा। देव की पूजा करें, शुभ होगा। |
| --- | --- |

| **234** | दो तीन चार की होरा कहती है कि आपको अर्थ-सम्पत्ति का लाभ हो रहा है। जीवन में हर प्रकार के सुख के योग हैं। इसी वर्ष वैशाख मास के ज्येष्ठ नक्षत्र में धन-सम्पत्ति और पुत्र जन्म के योग पाए जाते हैं। उसके बाद वैशाख मास की पंचमी तिथि, ज्येष्ठा नक्षत्र, वीरवार को अकस्मात् दुर्घटना के योग पाए जाते हैं। |
| --- | --- |

| **241** | मालिनी देवी कहती है कि आपको धन-सम्पत्ति और पुत्र लाभ होगा। आपने अपने जिस मित्र से विरोध किया है उससे समझौता करें, जिससे अर्थ लाभ होगा। आपको अट्ठावन वर्ष की आयु में चैत्र मास, रोहिणी नक्षत्र में दुर्घटना के योग पाए जाते हैं। मालिनी देवी कहती हैं कि आपकी पत्नी को जिस कार्य की चिंता रहती है, वह कार्य सिद्ध होगा। धन और पुत्र लाभ होगा। सम्बंधियों से मेल-मिलाप होगा और जीवन सुखी रहेगा। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र, बुधवार को रोग इत्यादि के योग पाए जाते हैं। |
| --- | --- |

| **242** | दो चार दो की होरा कहती है कि आपको अर्थ हानि हो सकती है। सरकार की ओर से हानि होगी। गृह में किसी को व्याधि रहेगी। आप यज्ञ करवाएं, जिससे सब बाधाएं दूर होंगी तथा शत्रु का विनाश होगा। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी, भरणी नक्षत्र को हानि के बजाए विदेश गमन से धन-सम्पत्ति का लाभ दिखाई देता है। सत्य नारायण, सूर्य भगवान, चण्डी देवी का पाठ और यज्ञ करें, जिससे सब बाधाओं का विनाश होगा। शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि, भरणी नक्षत्र आपके लिए घातक है। |
| --- | --- |

| **243** | दो चार तीन की होरा कहती है कि आपके घर को बहुत अधिक कष्ट के योग दिखाई देते हैं। आप स्वजनों से मेल करें जिससे कष्ट निवारण होगा। आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की सप्तमी तिथि, उत्तरा फाल्गुन नक्षत्र, रविवार के दिन आपने अपने कुल देवता के लिए मनौती की थी, उसे पूरी करें, जिससे आपकी चिंता दूर होगी। रविवार के दिन घर में पूजा करवाएँ जिससे दुःस्वप्न और व्याधि का नाश होगा। दान करें जिससे सुख-सम्पत्ति का लाभ होगा। |
| --- | --- |

| **244** | दो चार चार की होरा कहती है कि आपको मित्र की ओर से सुख-सम्पत्ति की वृद्धि के योग पाए जाते हैं। आपका अपनी पत्नी से झगड़ा होने से परिवार को पीड़ा पहुँचती है। आप मूर्खता न करें। मित्र से संधि करें और स्त्री से वाद-विवाद करना छोड़ दें, जिससे आपके कुल की वृद्धि होगी। धन की हानि नहीं होगी। आप सत्कर्म करते रहेंगे तो सुख मिलेगा। |
| --- | --- |

| **311** | तीन एक एक की होरा कहती है कि आपका आगामी समय कष्टकारी है। आपको कोई शारीरिक रोग लगेगा और अर्थ सम्पत्ति की हानि होगी। उसके बाद मार्गशीर्ष मास तक रोग-व्याधि दूर होगी और शुभ फल मिलेगा। तीस वर्ष की आयु में अल्पमृत्यु का भय है। शुक्रवार का व्रत करें और देवता का पूजन करें तो शुभ होगा। |
| --- | --- |

| **312** | शोषणी देवी कहती है कि आपके अपने बन्धु की ओर से अशुभ फल के बजाय धन लाभ के योग बने हैं। आप तिल-खाण्ड सहित सप्तमातृका का हवन करें, जिससे वैशाख मास में बने अल्पमृत्यु के योग टल जाएँगे। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी को अपने घर में अपनी जीवन रक्षा के लिए भगवती देवी और काली का पाठ करवाएँ। शोषणी देवी कहती है कि आपको तीर्थाटन से धन-सम्पत्ति का लाभ होगा और मित्रों तथा बन्धुओं से मेल-मिलाप होगा। आषाढ़ मास को दरिद्रता और आत्महत्या का भय है, इसलिए आप अपने कुलदेवता का पूजन करें। श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी, गुरुवार के दिन आपकी सम्पत्ति का विनाश होगा। आप सत्कर्म करें जिससे आपको शुभ फल की प्राप्ति होगी। |
| --- | --- |

| **313** | तीन एक तीन की होरा कहती है कि आपको कहीं से धन लाभ, स्वर्ण लाभ, भूमि लाभ होगा। सब प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी। काली देवी कहती है कि आपको पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, पंचमी तिथि को निश्चित रूप से भूमि लाभ होगा। देवी कहती है कि सुकर्म से आपको अर्थ लाभ और स्वर्ण लाभ होगा। रोग का नाश होगा। विदेश से वस्त्रादि का लाभ होगा, इसमें कोई संदेह नहीं। चौसठ साल की आयु में चैत्र मास की नवमी तिथि, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र, मंगलवार के दिन आपको मृत्युतुल्य कष्ट के योग हैं। |
| --- | --- |

| **314** | तीन एक चार की होरा कहती है कि आपको कोई व्यक्ति धन की हानि पहुँचाएगा, इसमें संदेह नहीं है। आप गृह पूजन व रुद्रीपाठ करें या मृत्यु संजीवनी का जाप करवाएँ। आपको अट्ठावन वर्ष की आयु में भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष में बन्धु से धन मिलेगा। इसमें कोई सन्देह नहीं। आप अपने मन में चिंता न करें। आपको संकट से छुटकारा मिलेगा और शुभ फलों की प्राप्ति होगी। मरुत् देवता कहता है कि आपको सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त होगी |
| --- | --- |

| **321** | मरुत् देवता कहता है कि आपको सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त होगी। तीन दो एक की होरा कहती है कि आपने पराई स्त्री से वाद-विवाद किया है जिसके शाप से आपको हानि हुई है। उससे समझौता करने से आपको अर्थ सम्पत्ति का लाभ होगा। अट्ठावन वर्ष की आयु में आपको मृत्यु तुल्य कष्ट है। यदि आप सत् कर्म करेंगे तो सौ वर्ष तक जीवित रह सकते हैं। ऐसा काली माता कहती है। आप धन-सम्पत्ति का अहंकार न करें, क्योंकि अहंकार विषतुल्य है। अपने कर्मानुसार आपकी आयु सत्तर वर्ष है। आज से बत्तीस वर्ष के बाद माघ मास के वृहस्पतिवार को अल्पमृत्यु का भय है। |
| --- | --- |

| **322** | तीन दो दो की होरा कहती है कि आपको धन-सम्पत्ति के योग दिखाई देते हैं। काली देवी कहती हैं कि ज्येष्ठ मास के मूल नक्षत्र में दो वर्ष के भीतर आपकी सभी पीड़ाएँ अवश्य नष्ट हो जाएँगी तथा सर्वसुख प्राप्त होंगे। काली माता कहती है कि आपको कहीं से धन-सम्पत्ति का लाभ होगा। सुख में वृद्धि होगी। अल्पमृत्यु का भय दूर होगा। ज्येष्ठ मास की पंचमी तिथि के मूल नक्षत्र में शनिवार के दिन अत्यंत पीड़ा होगी। आप सत् कर्म करें ताकि आपकी आयु पचपन वर्ष से अधिक हो। |
| --- | --- |

| **323** | तीन दो तीन की होरा कहती है कि आपको भविष्य में लाभ मिलेगा और सुख सम्पत्ति प्राप्त होगी, लेकिन अल्पमृत्यु के योग पाए जाते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र में आपको शत्रु द्वारा पीड़ा पहुँचाई जाएगी। श्रावण मास के शुक्लपक्ष में विजय तथा सुख के लक्षण दिखाई देते हैं। वाग्भवानी कहती है कि आपको धन लाभ है, लेकिन आषाढ़ मास में आपको शत्रु द्वारा कष्ट पहुँचाया जाएगा। छः मास के भीतर श्रावण मास की चतुर्थी, शुक्रवार के दिन बिजली गिरने से मृत्यु के योग बनते हैं। इसमें बचने की सम्भावना कम है। |
| --- | --- |

| **324** | मालिनी देवी कहती है कि आपके भाग्य में सुख-सम्पत्ति व वस्त्र लाभ की चिन्ता है, जिससे भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष के रविवार के दिन आपकी अल्पमृत्यु के योग बनते हैं। मालिनी देवी पुनः कहती है कि उपाय करने से छः वर्ष के भीतर मृत्यु दोष दूर होगा और लाभ प्राप्त होगा। भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की दशमी तिथि, रविवार, आर्द्रा नक्षत्र तक शुभ फल प्राप्त होगा। |
| --- | --- |

| **331** | तीन तीन एक की होरा कहती है कि आपको धन का अहंकार है, जिससे अट्ठावन वर्ष की आयु तक कठिनाई के योग पाए जाते हैं। काली देवी कहती है कि आप पूर्ण विश्वास करें कि वैशाख मास में आपको लाभ के योग बनते हैं और विष भी आपके लिये अमृत का काम करेगा। धन लाभ होगा परन्तु अहंकार करने से धन दूसरे के हाथ में चला जाएगा। सब प्रकार के सुखों की वृद्धि के लक्षण उदित होते दिखाई दे रहे हैं। पचास वर्ष की आयु तक सारे कष्ट दूर होंगे। कुल वृद्धि होगी। वैशाख मास की सप्तमी तिथि, गुरुवार, ज्येष्ठा नक्षत्र में भाग्योदय होगा। |
| --- | --- |

| **332** | तीन तीन दो की होरा कहती है कि आपका भाग्य मध्यम है। स्त्री के प्रति चिन्ता रहेगी, अर्थ लाभ भी मध्यम रहेगा। आप अपना मन शांत रखें, सुख प्राप्त होगा। इस वर्ष फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तिथि को आपकी स्त्री - चिंता दूर होगी और सफलता मिलेगी। भविष्य में अर्थ लाभ होगा और सर्व सुख की वृद्धि होगी। इसके बाद पैंतीस वर्ष की आयु में फाल्गुन मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि, रविवार को मारक योग बनता है। |
| --- | --- |

| **333** | स्थानीय देवता कहता है कि पितृ दोष के कारण आपका सुख नष्ट हो गया है, इसमें संदेह नहीं। यदि आप पितर को संतुष्ट करेंगे तो आपके सर्वसिद्धि के योग बनेंगे, ऐसा गणेश जी कहते हैं। मालिनी देवी कहती है कि शनि की दशा में बिजली से खतरा, पुत्र विरोध, धन हानि आदि होगी। आपको मृत्यु तुल्य कष्ट हो सकता है। श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की षष्ठी तिथि, रविवार के दिन अकस्मात् मृत्यु के योग बनते हैं। |
| --- | --- |

| **334** | मालिनी देवी कहती है कि आपका मित्रों और बन्धुओं से मनमुटाव है। सरस्वती देवी कहती है कि भविष्य में कार्य सिद्ध होंगे। भाग्योदय होगा, यश प्राप्त होगा तथा कार्य सफल होगा। कार्तिक मास, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र, शुक्रवार अर्धरात्रि तक कन्या |
| --- | --- |

| **341** | तीन चार एक की होरा कहती है कि वर्जित व्यक्ति के घर भोजन करने से धन की हानि हुई है। उसके साथ प्रीति करने से हर प्रकार का दुःख हुआ है। इसकी शांति के लिये स्वजनों सहित ब्राह्मण कन्या की पूजा करें। स्थानीय देवी का पूजन व जागरण करें तो लाभ होगा। ऐसा करने से दुःस्वप्न दोष दूर होंगे और हर प्रकार की पीड़ा से मुक्ति मिलेगी। आपने देवता की मनौती पूरी नहीं की है, इसलिये आपके सब कार्यों में विघ्न पड़ता है। पितृ दोष भी है। तीर्थ स्थान पर पितृ तर्पण करें और बन्धुओं से मेल करें तो शुभ होगा, अन्यथा आपका जीवन पचपन वर्ष की आयु में आषाढ़ मास में समाप्त हो जाएगा। |
| --- | --- |

| **342** | तीन चार दो की होरा कहती है कि जिन रिश्तेदारों से मेल वर्जित किया गया था, आपने उनसे मेल किया है, जिससे आपको हर प्रकार के कष्ट और हानि हुई है। सम्पत्ति लाभ, वस्त्र लाभ और स्त्री लाभ में विघ्न पैदा हुआ है। इसी कारण श्रावण मास की द्वितीया तिथि, शनिवार के दिन आपको मृत्यु तुल्य कष्ट हो सकता है। उपाय करने से आपकी आयु पचहत्तर वर्ष तक हो सकती है। |
| --- | --- |

| **343** | शापटि देवी कहती है कि आपके सारे कार्यों में विघ्न दिखाई दे रहा है। अन्न, धन, सम्पत्ति आदि की हानि हो रही है। क्लेश पैदा हो रहा है, विरोध उत्पन्न हो रहा है। भूत-प्रेत का कोप दिखाई दे रहा है। आप हर प्रकार से असंतुष्ट हैं। श्रावण मास की नवमी तिथि, ज्येष्ठा नक्षत्र, शुक्रवार तक आपकी जो सौ वर्ष की आयु है, उपाय न करवाने पर अल्प हो सकती है, क्योंकि आपको स्वप्न में ढाँक (दुर्गम पहाड़) दिखाई दिया है। |
| --- | --- |

| 344 | तीन चार चार की होरा कहती है कि आपने जो देवता की मन्नत की थी उसे पूरा करें, क्योंकि आपकी सारी इच्छाएँ पूरी हो गई हैं। भगवती देवी कहती है कि आपको अधिकतर चिन्ता धन की थी और कार्यों में विघ्न पड़ते थे। आठ वर्ष तक आपको मारक योग था। आप अब इन चिन्ताओं से मुक्त हो गए हो। |
| --- | --- |

| **411** | चार एक एक की होरा कहती है कि आपको भूत-प्रेत और डाकिनियों का कोप है, जिससे बन्धुओं से वाद-विवाद होता है। और आपका अनिष्ट होता है। आप हर प्रकार से अशान्त रहते हैं। हर प्रकार की पीड़ा से ग्रस्त रहते हैं। पुत्र को दुःख पहुँचता है। इसके निवारण हेतु आप ब्राह्मण से पूजा करवाकर वस्त्र तथा भूमि दान करें। भद्राणी देवी कहती है कि आपके घर में पितृ दोष भी है, जिससे आपकी हानि होती है। पितृ तर्पण करें ताकि आपको पुत्र लाभ हो और सौभाग्य प्राप्त हो। पचपन वर्ष की आयु में आषाढ़ मास की सप्तमी तिथि, सोमवार, हस्त नक्षत्र योग है। यदि आप इसका उपाय करेंगे तो आपकी आयु सौ वर्ष की होगी। |
| --- | --- |

| **412** | चार एक दो की होरा कहती है कि आपके मन में स्त्री की चिन्ता रहती है। आपके वाद-विवाद करने से अर्थ सम्पत्ति की हानि होती है। आप रात्रि के समय अपनी स्त्री से समागम करें और उससे प्रीति करें। जिससे आपके घर में हर प्रकार के शुभ कार्य होंगे। उसके बाद गणेश भगवान का पूजन करके सरस्वती देवी की पूजा करें। इससे आपका भला होगा। स्थान देवी कहती है कि आप वाद-विवाद छोड़कर राजपद से लाभ उठाएँ, जिससे सुख मिलेगा। धन का अहंकार न करें तो अर्थ सम्पत्ति का लाभ होगा और सभी कष्टों का निवारण होगा। राम जी कहते हैं कि श्रावण मास के शुक्लपक्ष की नवमी तिथि, रविवार के दिन, स्वाति नक्षत्र में आपको शुभ योग पाए जाते हैं। |
| --- | --- |

| **413** | चार एक तीन की होरा कहती है कि आपने स्थान देवता का विधि-विधान से पूजन नहीं किया है, जिससे आपके घर में उपद्रव हुआ है। पुत्र लाभ से भी आप वंचित हैं। आप अपने इष्ट देव का, कुलदेव का पूजन करें। ब्राह्मण को दक्षिणा दें। वसु देवता कहता है कि आपके घर में हर प्रकार के मंगल कार्य तथा धन-सम्पत्ति का लाभ है। अहंकार त्याग दें, जिससे आपके जीवन की हर समय रक्षा होगी। ब्राह्मण को भोजन खिलाएँ तथा दान दें अन्यथा आज से बीस साल में कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष में आपको अल्पमृत्यु के योग पाए जाते हैं। आप सत्कर्म करते रहें, जिससे आपकी आयु सौ वर्ष की हो सकती है। |
| --- | --- |

| **414** | **(52)** चार एक चार की होरा के अनुसार मालिनी देवी कहती है कि आपने अपने बन्धुओं से शत्रुता की है, जिससे मन बेचैन रहता है। यह विरोध पाँच मास से चल रहा है। स्थान देवता का भी दोष है। देवता की मनौती करें और ब्राह्मण को बुलाकर सप्तमातृका और शंकर भगवान् का पूजन करवाएँ तो मनोकामना पूर्ण होगी। वसु देवता कहता है कि आप अपने बन्धुओं से समझौता करें तो आपको अर्थ लाभ होगा। रोग का नाश होगा। मन की सारी चिंताएँ समाप्त होंगी। सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| **422** | **(54)** चार दो दो की होरा कहती है कि भविष्य में आपको दूसरों की शरण में जाना पड़ेगा, क्योंकि आपको हर प्रकार की पीड़ा और दरिद्रता के योग हैं। दूसरों के काम में विघ्न डालने से आपको उनका श्राप लगा है। आपको तीन वर्ष से यह योग चल रहा है। आपको दुःस्वप्न भी आते हैं। श्रावण मास के कृष्ण पक्ष में आपकी हानि होगी, स्त्री की ओर से भी कष्ट होगा। आपका मन अशांत रहता है। बारह साल के भीतर अष्टमी तिथि, बुधवार, ज्येष्ठा नक्षत्र में आपको विष योग (अल्पायु योग) है। काली देवी का पूजन करने से आपकी प्राण रक्षा होगी। |
| --- | --- |

| **423** | **(55)** वसु देवता कहता है कि आपको शत्रु पर विजय प्राप्त होगी। धन सम्पत्ति का लाभ होगा। विलम्बित कार्य सम्पूर्ण होंगे। सब प्रकार से शुभ होगा। आपके सब पापों का नाश होगा। आप जो भी कार्य करेंगे, आपको उसमें सफलता मिलेगी। आप इसी वर्ष पितृ पूजा करें। विष्णु तथा गणेश जी की पूजा करें। कन्या तथा वस्त्र लाभ होगा। पाप कर्म न करें। चंडिका देवी तथा कुलदेवता का पूजन करें तो कार्य सिद्ध होंगे। दुःस्वप्न के फल निष्फल होंगे। किसी पराए पितर का कोप है। आने वाले कार्तिक मास की अमावस्या, स्वाति नक्षत्र, रविवार की अर्धरात्रि से शुभ योग पाए जाते हैं। |
| --- | --- |

| **424** | **(56)** चार दो चार की होरा कहती है कि धर्म कर्म करने से आपको कार्य में सफलता मिलेगी। धन-सम्पत्ति का लाभ होगा, ऐसे लक्षण दिखाई दे रहे हैं। मित्रों से वैर समाप्त करके उनसे समझौता करें, तब मन में सोचा हुआ कार्य पूर्ण होगा। वसु देवता कहता है कि आप विवाद न करें तो आपको धन-सम्पत्ति का लाभ होगा और स्वास्थ्य ठीक रहेगा। कुल में हो रही हानि से छुटकारा मिलेगा। आठ साल के भीतर आपको शारीरिक कष्ट के योग हैं। विनायक की पूजा से यह कष्ट दूर होगा तथा सब सुख प्राप्त होंगे। आपकी आयु मार्गशीर्ष मास की त्रयोदशी, बुधवार, भरणी नक्षत्र तक पैंसठ वर्ष की है। |
| --- | --- |

| **431** | **(57)** चार तीन एक की होरा कहती है कि आपके अपने परिवार में विरोध है। घर में क्लेश होने के कारण लाभ व संतोष नहीं होगा। आप ईश्वर की शरण में जाएं तो आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। सप्तमातृका का पूजन करने से आपका कार्य सिद्ध होगा। आषाढ़ मास में ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की पूजा करने से भविष्य में आप छत्रपति बन सकते हैं। बीस वर्ष के भीतर आपके मारक योग बने हैं। आप अपने मित्र से विरोध न करें। अपने जीवन की रक्षा हेतु आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि, विशाखा नक्षत्र, वीरवार के दिन ब्राह्मण को बुलाकर पूजा करवाएँ। |
| --- | --- |

| **432** | **(58)** वसु देवता कहते हैं कि आपका बन्धु से विरोध है, इसलिये आपको पितृदोष लगा है, जिससे रोग-व्याधि उत्पन्न हुई है। इससे मुक्ति पाने के लिए कुल देवता, ब्रह्मा, विष्णु और महेश की करें तब श्री की प्राप्ति होगी। देवता का कोप है जिससे पूजा दुःस्वप्न आते हैं और सुख प्राप्त नहीं होता। स्थानीय देवी कहती है कि अर्थ हानि और स्त्री से कलह के योग हैं। केतु ग्रह का दोष होने से शारीरिक पीड़ा उत्पन्न होगी। आप वाद-विवाद त्याग दें और अहंकार ने करें। तीर्थाटन से आपके जीवन को खतरा है। पौष मास की दशमी या सप्तमी तिथि, अश्विनी नक्षत्र, बुधवार को आप पूजन करवाएँ ताकि आपकी दीर्घ आयु हो। |
| --- | --- |

| **433** | **(59)** वसु देवता कहते हैं कि आपको कार्य में असफलता मिलेगी। कुटुम्ब में विरोध होगा, रोग आदि की उत्पत्ति होगी।हर प्रकार की हानि होगी, रक्त विकार होगा। ब्राह्मण कन्या की पूजा करें तो लाभ होगा। वाद-विवाद न करें। केतु की अशुभ दशा के योग हैं, जिससे धन हानि, विवाद, दुख, कुल में शत्रुता उत्पन्न होगी। चण्डिका की पूजा करने से कार्य सिद्ध होंगे। राम की कृपा से पुत्र लाभ होगा। राज लाभ दिखाई देता है। |
| --- | --- |

| **434** | अक्षणी देवी कहती है कि आपके कार्य में विघ्न-बाधाएँ आ रही हैं, क्योंकि आपने दूसरे के काम में बाधा डाली है। पाँच मास के भीतर कुलदेवी की पूजा करें और तिल-खण्ड से यज्ञ करें, जिससे दुःस्वप्न का फल निष्फल होगा। ऐसा करने से आयु की वृद्धि होगी। विवाद न करें। आप स्वप्न में कुएँ में बैठे थे, जो अशुभ फलदायक है। अल्पमृत्यु योग दिखाई देते हैं। तीस वर्ष के भीतर मृत्यु योग है। मार्गशीर्ष मास की पंचमी तिथि, ज्येष्ठा नक्षत्र, मंगलवार को आपके कर्म के अनुसार नारी की हानि के योग हैं। |
| --- | --- |

| **441** | चार चार एक की होरा कहती है कि आपको अन्न-धन का लाभ है, प्राण रक्षा होगी, लेकिन आप पर कुदृष्टि पड़ने से कष्ट और चिन्ता रहेगी। आपकी हानि होगी। उसके निवारण हेतु वस्त्र तथा स्वर्ण दान करें। इष्ट देव व पितर का पूजन करें, जिससे आपको श्री की प्राप्ति होगी। आने वाले माघ मास तक आपको कष्ट आने के योग हैं, क्योंकि शनि की दशा बैठने वाली है। अट्ठावन वर्ष की आयु में मारक योग हैं, कार्तिक मास के पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में अल्प आयु के योग हैं। उस समय ब्राह्मण की पूजा करें तथा भोजन करवाएँ तो कष्ट टल सकता है। |
| --- | --- |

| **442** | स्थानीय शापटि देवी कहती है कि आपने शुभ कर्म करने में विलम्ब किया है, जिससे आपको कष्ट उत्पन्न हुआ है। आपने गणेश भगवान का मन में ध्यान व पूजन भी नहीं किया है, इसलिये आपकी अल्प मृत्यु हो सकती है। ब्राह्मण कन्या का पूजन करें तो श्री की वृद्धि होगी। दुःस्वप्न दिखाई दे रहे हैं, जिसका फल अशुभ होगा। शोषणी देवी कहती है कि आपको वस्त्र लाभ होगा, कार्य सिद्ध होंगे, शुभ फल की प्राप्ति होगी, लेकिन केतु की अशुभ दशा आरम्भ हो रही है। इसके निवारण हेतु नियमपूर्वक 130 व्रत करें तो आपकी आयु चैत्र मास की अष्टमी तिथि, मूल नक्षत्र, शुक्रवार तक पचपन वर्ष की हो सकती है, यह निश्चित है। |
| --- | --- |

| **443** | चार चार तीन की होरा कहती है कि मित्रों से मिलाप करने से आपके कार्य पूर्ण होंगे। सब व्याधियों से मुक्ति मिलेगी। हृदय रोग दूर होगा। शुभ कर्म करने से भविष्य में महान व्यक्ति बनेंगे, इसमें सन्देह नहीं है। तिल दान करें तो शुभ रहेगा। शोषणी देवी कहती है कि मित्र से मिलने की आपकी जो चिन्ता है वह पूर्ण होगी। अट्ठावन वर्ष की आयु में भाद्रपद मास, रोहिणी नक्षत्र, बुधवार के दिन आपको शुभ फल मिलेगा। |
| --- | --- |

| **444** | चार चार चार की होरा कहती है कि देवता का ध्यान करने से आपको विजय प्राप्त होगी और अर्थ लाभ होगा, स्थान से विदेश यात्रा होगी, धर्म की प्राप्ति होगी। कालदेवी कहती है कि संतान का लाभ होगा, लेकिन आपके साधारण कार्य बिघड़ेगे। ब्राह्मण की पूजा करें, जिससे आपको लाभ होगा। शोषणी देवी कहती है कि सामान्य कार्य में बड़ी विघ्न-बाधाएँ आ रही हैं, जिनका समाधान करने से आपको आर्थिक लाभ होगा। दुःख के बाद सफलता मिलेगी। आयु 68 वर्ष की होगी, यह निश्चित है। |
| --- | --- |

| **445** | स्थानीय शापटि देवी कहती है कि आपको विजयी होने की पूर्ण संभावना है। सर्वांगी देवी कहती है कि आपको जीवन-उपाय से लाभ होगा।आपको स्वप्न में देवता के दर्शन होते हैं, जिससे घर में लाभ होने के लक्षण दिखाई देते हैं। राजलाभ होगा, पुत्र वृद्धि होगी। आप अपने सम्बंधियों से विरोध न करें तो आपको हर प्रकार के सुख मिलेंगे । पाप कर्म न करें। सत् कर्म करें तो शुभ होगा | |
| --- | --- |

| **446** | स्थानीय शापटि देवी कहती है कि आपने अपने कर्तव्यों में कठिनाई की है, जिससे आपको कष्ट उत्पन्न हुआ है। वाणिज्य में व्यापार होने से आपको धन लाभ होगा। अशुभ दशा समाप्त हो जाएगी। इसके बाद से शुभ कार्य होंगे। इन बातों का पालन करें। शोषणी देवी कहती है कि आपने दूसरों के साथ मैत्री नहीं की, जिससे आपको कष्ट आया है। आपने गणेश भगवान का मन में ध्यान नहीं किया, इसलिए आपको धन-धान्य की प्राप्ति नहीं हो पायी है। इसके निवारण हेतु गणेश भगवान की पूजा करें, जिससे आपको अच्छा लाभ होगा। |
| --- | --- |

| **447** | चार चार सात की होरा कहती है कि आपने सामाजिक कर्मों में विलम्ब किया है, जिससे आपको अपमान होगा। इन बातों का पालन करें और उन्हें अच्छे से विचार करें। वैशाख मास में चतुर्दशी, रोहिणी नक्षत्र, बुधवार को भगवान की पूजा करें, जिससे आपकी आयु वृद्धि हो सकती है।  इति बड़ी कालज्ञानी होरा सम्पूर्ण |
| --- | --- |

भोट प्रश्नावली

| **भो** | **1** | **2** | **3** | **4** | **4** | **6** | **7** | **8** |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| ट | **9** | **10** | **11** | **12** | **13** | **14** | **15** | **16** |
| प्र | **17** | **18** | **19** | **20** | **21** | **22** | **23** | **23** |
| श्ना | **25** | **26** | **27** | **28** | **29** | **30** | **31** | **32** |
| हो | **33** | **34** | **35** | **36** | **37** | **38** | **39** | **40** |
| र | **41** | **42** | **43** | **44** | **45** | **46** | **47** | **48** |
| का | **49** | **50** | **51** | **52** | **53** | **54** | **55** | **56** |
| है | **57** | **58** | **59** | **60** | **61** | **62** | **63** | **64** |

| 1 | कार्य सिद्ध होगा। शत्रु का नाश होगा। एक चित्त होकर पाँच जगहों का जल लेकर काले रंग की बकरी की पूजा करें तो भला होगा। वह जो आपको पराया लगता है वह देवशक्ति के कारण है। उससे विरोध कर अपने शत्रुता भोल ली है। उसकी जो वस्तु आपने ले रखी है उसे वापस कर दें क्योंकि इस कारण आपको कई व्याधियाँ लगी हैं। इसमें दूसरा कोई मध्यस्थ भी है जो आप में शत्रुता पैदा करवा रहा है। उसकी वस्तु छोड़ दें, शत्रुभय दूर हो जाएगा। पाँच स्थानों का पानी और काली बकरी लेकर राक्षस की पूजा करें तो पुत्र लाभ होगा। आप चिन्तामुक्त होंगे और आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। तब समझना कि यह विद्या सही है। |
| --- | --- |
| 2 | आप द्वारा सोचे गए कार्य में सफलता प्राप्त होना उतना ही कठिन है जितना सिंह से जीतना। कार्य अत्यंत कठिन है परन्तु तुम्हें देवता का बल प्राप्त होगा। दूसरों की बातों पर विश्वास न करें। जिसने तुम्हें दुःख पहुँचाया है या जिसे तुमने दुःख दिया है, उससे मित्रता न करें। आबाद मास में आप किसी वस्तु से भयभीत हुए हो। छलावे (झाड़ी विशेष) और मेंढे की पूजा करें तो शारीरिक सुख प्राप्त होगा। आपकी स्त्री ने स्वप्न में देवता के दर्शन किये हैं, इससे समझना कि ज्ञान सच्चा है और यह कार्य सिंह पर विजय के समान सिद्ध होगा । इसे झूठ न समझें। देव का बल है। इस कार्य हेतु आपको जूझना पड़ेगा | आपके शत्रु ने आप पर वार करने का निश्चय किया है । वे पाँच शत्रु हैं जिन्होंने देवता का आहवान कर बल प्राप्त किया है और आपको लगाया है। इसके निवारण हेतु आप देवी ( योगिनी) की पूजा करें। आषाढ़ मास में फल के साथ देवी पूजन करें तो स्वप्न में भी दुःख प्राप्त न होगा । |

| 3 | आप द्वारा सोचा गया कार्य कोई पराई स्त्री सिद्ध नहीं होने देगी। यह बात झूठ नहीं है। उस स्त्री का पति भी इस कार्य की सिद्धि नहीं चाहता। ये लोग पश्चिम की ओर से काली वस्तु लाए थे। आपको पानी में डराया गया है। आपके घर से उत्तर की ओर एक कटा वृक्ष है जिस पर भूतवास है। आपके बाएँ अंग में कोई चिह्न है परन्तु वह हानिकारक नहीं है। दुष्ट ग्रहों की शान्ति हेतु पूजा करवाएँ तो धन धान्य की प्राप्ति होगी। अपने मित्र की संगति में रहने से उत्तम फल मिलेगा। कटे वृक्ष की छाया से जो व्याधि उत्पन्न हो रही है, उसके निवारण हेतु पश्चिम दिशा में जल से पूजा करें। बाएँ अंग के चिह्न के लिये नवग्रह पूजन करें। |
| --- | --- |

| 4 | आपका कार्य पूर्ण होने में बाधा है क्योंकि आपने कभी देवता की मनौती की थी, जिसे पूरा नहीं किया। कोई स्त्री भी आपका कार्य सिद्ध नहीं होने देती। आपके अकस्मात् ही कई शत्रु बन जाते हैं। आपके कुल में किसी प्रकार का सुख नहीं है। यह सब इसी स्त्री के कारण है। तुम्हारी पत्नी भाग्यवान् है। श्रावण मास में पश्चिम दिशा में पूजा करें। पौष मास में माष का पुतला बनाकर छागल की पूजा करें तो भला होगा। किसी पराए व्यक्ति ने आप पर टोना किया है जो आपको भी ज्ञात है। वे दो व्यक्ति हैं। आपसे भी गलती हुई है जिस कारण परिवार में क्लेश तथा अन्न-धन का नाश हो रहा है। आप अपने देवता को मनाएँ तो कार्य सिद्ध होगा। आगे आप पर भारी कष्ट आ सकता है। आपकी पत्नी को भी दुःख प्राप्त हो सकता है। पश्चिम दिशा में देवता की पूजा करें। श्रावण मास में आपके घर में कोई काली वस्तु लाई गई है। उस समय आपके घर में और भी व्यक्ति थे। निवारण हेतु असौज मास में पाँच पवित्र स्थानों का जल लेकर छागल की पूजा करें व सुपारी की बलि दें तो कार्य सिद्ध होगा। |
| --- | --- |

| 5 | आपने अपने मन में कोई बड़ा कार्य सोचा है जो सिद्ध होगा। लेकिन शत्रु इसकी सिद्धि में बाधा डाल रहा है। जो आपका शत्रु है, उसे आप अपना मित्र समझते हैं। उसके साथ बुरा व्यवहार न करें तभी आपको पुत्र व धनलाभ होगा। हर प्रकार की शांति मिलेगी। कार्य सिद्ध होगा। आपके घर में आपकी स्त्री अशान्त, दुःखी व रोती रहती है। उसके साथ प्यार से रहें, तभी आपके घर में पुत्रलाभ होगा और मन को शान्ति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 6 | यह कार्य सद्बुद्धि से करना, तभी लाभ होगा। ऐसा लगता है कि आपके घर में स्त्री और पुरुष का झगड़ा रहता है। वे एकमत नहीं हैं, इसी अहंकार के कारण घर में कई प्रकार के क्लेश पैदा हो रहे हैं। स्त्री ने फाल्गुन मास में अन्य आदमियों के सामने झगड़ा किया। ऐसा लगता है कि आपके परिवार पर दक्षिण दिशा से किसी भूत का प्रकोप है जो मन को भयभीत रखता है। माघ मास की अमावस्या को छागल की पूजा करें तो कार्य सिद्ध होगा। आपका अपने बन्धु से विरोध है और आप उससे रुष्ट हैं। उसके बहकावे में न आएं। फाल्गुन मास में दक्षिण दिशा में पानी के बीच आप डरे हैं, ऐसा दिखाई देता है। पानी का लोटा लेकर नीले रंग के फूलों से देवी की पूजा करें तो शुभ होगा। |
| --- | --- |

| 7 | आप द्वारा सोचा गया कार्य आपका अपना है। मन में दुविधा न रखें, आपका कार्य सिद्ध होगा। आपका देवता आप पर कुपित है, उसकी पूजा करें। कार्य की सिद्धि होगी व पुत्र लाभ होगा। कार्य पूर्ण होने से मन को शान्ति प्राप्त होगी। ब्राह्मण के कहे अनुसार कुल देवता तथा पृथ्वी की पूजा करें तो कार्य सिद्ध होगा तथा धन और वस्तु का लाभ होगा। दुःख समाप्त होंगे। पश्चिम दिशा की ओर पूजा करें तो सुख-शान्ति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 8 | आपके कार्य में सफलता नहीं दिखाई दे रही है। यह कार्य कुलदेवता के पूजन से पूर्ण होगा। आपकी पत्नी को स्वप्न में कुलदेवता के दर्शन हुए और देवता ने बताया कि आपकी पीठ पर निशान है और आने वाले दो वर्षों के भीतर तुम पर कष्ट आ सकता है। इसी वर्ष देवता की पूजा कर उसे सन्तुष्ट करें तो सुख शान्ति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 9 | आप द्वारा सोचा गया कार्य आपके परिवार से सम्बंधित है। आपके परिवार में दो विचारधारा वाले व्यक्ति हैं। आपका बन्धु आपके परिवार में फूट डालने का प्रयत्न करता है, जिस कारण आपके घर में कई प्रकार की क्षति होती है। यूं भी आपके कई शत्रु हैं। उन पर विश्वास न करें। कुलदेवता की पूजा करें तो पारिवारिक कलह समाप्त होगी और सुख की प्राप्ति होगी। |
| --- | --- |

| 10 | आपके घर में आपका शत्रु जो बाधा डालता है, उसकी शान्ति के लिये नवग्रहों की पूजा करें। चार इष्ट आपके परिवार में कष्ट पहुँचाते हैं, उनकी पूजा करें तो दुश्मन का नाश होगा। आपका शत्रु आपको हर प्रकार से क्षति पहुँचाना चाहता है। उस पर विश्वास न करें। आपके घर से पूर्व दिशा की ओर एक कटा वृक्ष है, उसका भी दोष है। पूर्व दिशा में ब्राह्मण से पूजा करवाएँ। चार बत्तीयुक्त तेल के दीपक से पूजा करें तो सुख शान्ति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 11 | सोचे गए कार्य को शुद्ध मन से आरम्भ करें, शुभ फल की प्राप्ति होगी। सुख शान्ति मिलेगी और धन, वस्त्र तथा पुत्र लाभ होगा। आपके घर में जिस व्यक्ति को पीड़ा रहती है, वह ज्येष्ठ मास में सर्प देखकर डर गया है। उस समय पश्चिम दिशा में कृष्णपक्ष के समय तीन व्यक्ति भी थे। छागल पूजा और मेढ़े की पूजा करें तो सुख की प्राप्ति होगी। आपको पुत्र लाभ भी हो सकता है। |
| --- | --- |

| 12 | आपका मन चिन्तित है कि आपका कार्य कैसे सिद्ध होगा। जब यह कार्य होना था, तब आपने नहीं किया। अब आप इसके पूरा होने के बारे में सोचते हैं। इसकी पूर्ति के लिये उत्तर दिशा की ओर से लकड़ी काट कर, उस पर यन्त्र बनाकर उसे पश्चिम दिशा में गाड़ दें। पूर्व दिशा में किसी व्यक्ति के साथ भूमि के कारण विरोध है, जिससे आपको कष्ट है। धन-धान्य की हानि हो रही है। उत्तर दिशा की ओर के खेत में किसी पितर की स्थापना है, जो आपसे कुपित है। पितृ पूजा करें। पश्चिम दिशा की ओर दीपक जलाकर पूजा करें। पेठे की बलि दें तो सुख शान्ति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 13 | आपका कार्य ठीक नहीं है। आपने अपनी पत्नी से जिस लाभ की कामना की थी, उसमें संशय है। आपकी पत्नी का परपुरुष से सम्बंध है, जो आपके लिये घातक है। इसीलिये आपको सुख नहीं मिलता। स्त्री परपुरुष से प्रेम न करे तो शत्रु का नाश होगा और आपको लाभ होगा। |
| --- | --- |

| 14 | आपका कार्य पूर्ण होना इतना कठिन है जितना बिना हथियार और बिना सवारी के शत्रु से जूझना। आपको इष्ट का दोष लगा है। आपके घर में किसी मनुष्य की अकस्मात् मृत्यु हुई है जिससे वह प्रेतयोनि में पड़ा है। आपके किसी शत्रु ने आपके घर को अशुद्ध किया है, जिस कारण आपके घर में कई प्रकार के उपद्रव, जैसे मकान का बोलना, स्वप्न में भयंकर चीजें दिखाई देना, मृत व्यक्ति दिखाई देना, चक्कर आना आदि हो रहे हैं। घर की शुद्धि हेतु पूजा करवाएँ। चार मुख वाला दीपक जलाकर, अष्टबलि देकर, कैंथ की लकड़ी में कच्चे सूत का धागा बाँधकर दक्षिण दिशा में मिट्टी में गाड़ दें। घर में हवन करें तो शुभ होगा। |
| --- | --- |

| 15 | ऐसा लगता है कि आप किसी दूसरे का प्रश्न पूछ रहे हैं। आपकी पत्नी को पुत्र लाभ होना था, वह गर्भपात के कारण नहीं हो सका। क्योंकि किसी स्त्री के साथ उसकी लड़ाई है और उस स्त्री के साथ देवता तथा एक वीर है, जिस कारण जीव का हनन हुआ। देवता तथा वीर की शंख सहित पूजा करें। किसी व्यक्ति को दान दें। आपकी पत्नी भाद्रपद मास के शुक्लपक्ष में दक्षिण दिशा में वस्त्र को देखकर डर गई है, जिस कारण उसे दुःख उठाना पड़ रहा है। दूसरी स्त्री के साथ मित्रता न करें और बकरी की पूजा करें तो शुभ होगा। |
| --- | --- |

| 16 | यह कार्य ठीक नहीं है। कुल देवता के रुष्ट होने से आपके परिवार में झगड़ा है। आपका शत्रु पूर्व दिशा में रहता है, उसके साथ सात आदमी हैं। उनमें से एक आदमी ने आकर आपके घर में जादू किया है। देवता की भक्ति करने से कार्य सिद्ध होगा। ब्राह्मण को वस्त्रदान दें। पंचगव्य से घर को शुद्ध करके शान्तिपाठ करवाएँ और अपने परिवार के झगड़े को मिटाएँ। |
| --- | --- |

| 17 | ऐसा दिखाई देता है कि धन-धान्य का लाभ होने के साथ-साथ व्यय भी अधिक होता है। गृह में पीड़ा रहती है। देवता का चिंतन करें तो आपको सुख शान्ति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 18 | आपका मन चिन्तित है। आपके घर में दो स्त्रियाँ झगड़ा करती हैं। एक स्त्री के पास कोई वस्तु है जो किसी के दिल को दुःखी करके ली गई है। वह वस्तु अच्छी नहीं है, उसके साथ भूत है, वह आपके घर में हर प्रकार की हानि करता है। भयंकर स्वप्न दिखाई देते हैं। भूत को भगाने के लिये चण्डी देवी की पूजा करें तभी सुख प्राप्त होगा। |
| --- | --- |

| 19 | आपने जो सोचा है, ऐसा लगता है कि आपका किसी नज़दीकी व्यक्ति से झगड़ा हुआ है। उसी के श्राप से आपको इष्ट का दोष लगा है। आपके मन में भय है। आपको इस बात का पता है इसलिये उसके साथ समझौता करके अपने मन को शान्त करें। पूजा करें और पञ्चमी के दिन देवी की इष्ट की करें। पूजा कुलदेवता की भी पूजा करें तभी सुख-शान्ति मिल सकती है। |
| --- | --- |

| 20 | ऐसा दिखाई देता है कि आपका मन संतुष्ट नहीं है। लोभवश आपके मन में चिन्ता है। आपको भय है कि पूर्व दिशा से आप पर किसी की कुदृष्टि पड़ती है। जिस स्थान पर आप डरे हैं, वहाँ पर बहुत से और मनुष्य पशु भी थे। शान्ति हेतु पूर्व दिशा में पूजा करवाएँ। चतुर्मुख दीपक, नीले रंग के फूल तथा चावल लेकर पूजा करें। छठे महीने आपको कोई रोग लग सकता है, जिसमें औषधि से भी लाभ नहीं होगा। जो प्रेत आपको लगा है, उसकी पूजा करने से संकट दूर होगा और सुख-शान्ति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 21 | आपके मन में जो चिन्ता है, उसके प्रति ज्यादा उलझन में न पड़ें। पूर्व दिशा की ओर आपका कोई शत्रु है जो आपके कार्य में विघ्न पैदा करता है। उससे आप न घबराएँ। आपका कार्य सिद्ध होगा। माघ या असौज मास के कृष्णपक्ष में गृह में शान्तिपाठ करवाएँ तो आपके पूर्व जन्म के पाप नष्ट होंगे। पहले से जो आपसे शत्रुता रखता आ रहा है, आपको उससे भय लगता है। वह शत्रु आपके साथ मित्रता करेगा और आपका काम बनेगा तथा आपको सुख और शान्ति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 22 | आपके बहुत से शत्रु हैं जो प्रबल हैं। इस कारण आप दुःखी हैं। आप अपने मन में भय न करें और उन पर विश्वास न करें। पश्चिम दिशा की ओर, जहाँ दो व्यक्ति भी थे, पानी के पास आप डरे, वहाँ आप पर प्रेतछाया पड़ी है। पश्चिम दिशा में सुपारी की बलि दें और चतुर्मुख दीपक जलाकर भूत भगाएँ। घर में कुलदेवता की पूजा करें तो शत्रु का नाश होगा और कार्य सिद्ध होगा। |
| --- | --- |

| 23 | आप द्वारा सोचे गए कार्य में आपको बहुत कष्ट है। यह कार्य बहुत बड़ा है। इसमें आपको हानि हो सकती है। शारीरिक कष्ट भी हो सकता है। स्त्री के हाथ से या स्त्री के श्राप से आपको इष्ट लगा है। अपने कार्य की सिद्धि के लिये देवी की पूजा करके किसी को वस्त्र तथा अन्नदान करें और कन्या को भोजन खिलाएँ तो शुभ होगा। |
| --- | --- |

| 24 | होरा कहती है कि आपका एक मित्र से मिलाप हुआ है परन्तु वह आपका भला नहीं चाहेगा। आपने अपने मन में देवता के प्रति कुछ संकल्प किया था, उसे पूरा करें तो आपके घर में धन-धान्य की वृद्धि होगी तथा पुत्रलाभ होगा। अपने मित्र के साथ वैर न करें। मन शांत रखें तभी सुख और शान्ति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 25 | होरा कहती है कि भूमि के लिये आपका किसी व्यक्ति से झगड़ा हुआ है और आपसे कुछ भूल हुई है, इसलिये आपको कष्ट उठाना पड़ रहा है। धन-धान्य की हानि होती है। परिवार में जीव की मृत्यु होती है। भूमि के लिये उस व्यक्ति के साथ समझौता करें। उसकी भूमि छोड़ दें और अपने देवता की पूजा करें तो आपको सुख - शान्ति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 26 | होरा के अनुसार आपका मन चिन्तित रहता है और आपकी हर प्रकार से हानि हो रही है। गृह में किसी भी प्रकार की वृद्धि नहीं होती। अपनी पत्नी के साथ आपका विवाद होता है। आपकी पत्नी के साथ किसी भूत ने घर में प्रवेश किया है, जिससे आपको हर वस्तु की हानि होती है। अपनी स्त्री के मन को शान्त करें। उसके साथ समझौता करें तभी सुख और शान्ति की प्राप्ति होगी। |
| --- | --- |

| 27 | होरा के अनुसार आपको पित्त, वायु, कफ और रक्त दोष का भय है। कोई रोग लग सकता है। औषधि से आपको कोई लाभ नहीं हो सकता। पूर्व दिशा की ओर आपका कोई शत्रु है जिसने आपके घर में जादू किया है। शांति हेतु पूजा करें। अष्टमी के दिन पशु की बलि दें तो भूत भाग जाएगा। पितृ दोष लगा है, इसलिये शान्ति हेतु पितृ पूजा करवाएँ तो कष्ट दूर होगा। |
| --- | --- |

| 28 | होरा के अनुसार आपके विचार किसी नारी से लड़ाई झगड़े से सम्बंधित हैं। उसकी ननद और सास से हर प्रकार से अनबन है। इसका कारण यह है कि घर में कोई पुरुष नहीं है। इष्ट की पूजा करने से सुख - शान्ति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 29 | होरा के अनुसार आपका मन चिन्तित है कि यह कार्य कैसे पूरा होगा। आप स्त्री के साथ यात्रा करते समय किसी के साथ डरे हुए हैं। जिस कारण आपको भय है और सोचे हुए कार्य में सिद्धि नहीं होगी। शान्तिपाठ करवाएँ और पञ्चमी के दिन स्त्री से जुड़ा कार्य न करें। |
| --- | --- |

| 30 | होरा कहती है कि आपको किसी प्रकार के हानि का भय है। पूर्व दिशा में किसी व्यक्ति का जादू घर में है, जिस कारण आपका हर प्रकार से कष्ट है। शान्ति हेतु पश्चिम दिशा में ब्राह्मण से शान्तिपाठ करवाएँ और चार दीपक जलाकर किसी वस्त्र का दान दें। |
| --- | --- |

| 31 | होरा कहती है कि आपके घर में स्त्रियाँ लड़ती हैं। यह आपके परिवार के लिये अच्छा नहीं है। इससे धन-धान्य की हानि होती है। स्त्री के साथ प्रेम से रहें और श्रावण मास में उत्तर दिशा में यज्ञ करवाएँ तो सुख - शान्ति की प्राप्ति होगी। |
| --- | --- |

| 32 | होरा कहती है कि आपका मित्र आपको किसी कार्य से भ्रमित करता है। आपने सोचा था कि इस कार्य में लाभ होगा परन्तु वह नहीं हुआ। इससे आपको हानि हो सकती है। आपकी पत्नी ने किसी पुरुष को देखा और वह उसके साथ एक नदी पर गई। इससे आपके घर में हर प्रकार की हानि होती है। इष्ट की पूजा करने से कष्ट दूर होगा और सुख की प्राप्ति होगी। |
| --- | --- |

| 33 | होरा कहती है कि आपका मन चिन्तित है। स्त्री के साथ आपका वैर है। पश्चिम दिशा में किसी स्त्री से आप डर गए हैं। आपको भय है कि उस स्त्री का भूत आपके घर में प्रवेश कर गया है। जिससे आपको हानि हो रही है। शान्ति हेतु पूजा करवाएँ और स्त्री के साथ वैर न रखें तो सुख - शान्ति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 34 | होरा कहती है कि आपको पुत्र लाभ होना था। स्त्री ने किसी पुरुष का श्राप लिया है, जिससे आपको यह कष्ट हुआ है। श्रावण मास में चार दीपक जलाकर, पूजा करवाएँ तो पुत्र लाभ होगा और सुख की प्राप्ति होगी। |
| --- | --- |

| 35 | होरा कहती है कि आपने सोचा था कि यह कार्य स्त्री के साथ होगा परन्तु स्त्री आपके साथ वैर रखती है। इससे आपको कष्ट हो रहा है। स्त्री को विश्वास में लेकर कार्य करें और पश्चिम दिशा में किसी ब्राह्मण से पूजा करवाएँ तो सुख - शान्ति प्राप्त होगी।चौराहे पर छोड़कर एक बालिस्त कैंथ की लकड़ी लेकर, तीन बार इसमें कच्चा सूत बाँधकर चौराहे में गाड़ दें और उसमें लोहे की कील लगा दें। घर आकर कुलदेवता की पूजा करें। |
| --- | --- |

| 36 | होरा का फल है कि इस कार्य में सुख शान्ति दिखाई देती है। देवता तथा इष्ट की उपासना करें। आपका भाग्य अच्छा दिखाई देता है। आपके कर्मों के फल के कारण आपके घर धन-धान्य की हानि होती है और मन में शंका रहती है। आप परोपकारी लगते हैं, इसलिये आपके पास धन संचित नहीं होता। इन्द्र देवता, विष्णु भगवान तथा नवग्रह का पूजन करें तो शुभ होगा। |
| --- | --- |

| 37 | आपके घर में संतान का दुःख है, जिस कारण मन अशान्त रहता है। यह इस कारण है कि आपके घर में पूर्व दिशा से लाल रंग की कोई वस्तु लाई गई है, जिसके साथ भूत का प्रवेश हुआ है। वही आपके घर में क्लेश पैदा कर रहा है। इसलिये भूत को घर से भगाने का उपाय करें। देवता की पूजा करें, तभी शान्ति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 38 | ऐसा दिखाई देता है कि आपका बन्धु आपसे दुःखी है। धन या भूमि के लिये उसके साथ विवाद हुआ जिसमें आपसे कुछ भूल हुई है। इस कारण आपको बन्धु का श्राप लगा है। अपने बन्धु से मैत्री करें तो सुख प्राप्त होगा। |
| --- | --- |

| 39 | ऐसा लगता है कि आपका शत्रु आपको जीने नहीं देता। वह हर प्रकार से आपका अनिष्ट करता है। वह आपके लिये घातक है। आपकी पीठ पर जो चिह्न है उससे भी आपको दुःख प्राप्त होता है। आप शिव की पूजा करें तभी आपको धन-धान्य का लाभ होगा और सुख शान्ति मिलेगी। शिव की उपासना करें। |
| --- | --- |

| 40 | ऐसा लगता है कि आप देवता के मंदिर से कोई वस्तु उठाकर लाए हो जिससे आपको देवता का दोष लगा है। आपके घर में हर प्राणी दुःखी रहता है। आपका मन बेचैन रहता है। घर में किसी व्यक्ति को मूर्च्छा आती है, वह देवता का कोप है। देवता की जो वस्तु आपके घर आई थी आपने उसको नष्ट कर दिया है, अतः देवता को प्रसन्न करें। उसके निमित्त यज्ञ करवाएँ। आपका एक बन्धु भी आपसे दुःखी है। जो परायी भूमि आपने ली है उस पर बन्धु का भी अधिकार है। बन्धु के साथ मित्रता करें तभी शांति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 41 | होरा कहती है कि आपको हर प्रकार का सुख प्राप्त है। आपने जो प्रश्न किया है वह दूसरे के लिये किया है। जिसका यह प्रश्न है उसके बने काम बिगड़ जाते हैं। परिवार में अशांति रहती है, भूमि के कारण बन्धु के साथ विवाद रहता है। बन्धु की ज़मीन वापिस कर दें। अपने देवता की पूजा करें, तभी आपका शुभ होगा। |
| --- | --- |

| 42 | सोचा गया कार्य आपके लिये अच्छा नहीं दिखाई दे रहा है। आपके घर के समीप की भूमि पर भूत का वास है, जिस कारण आपके परिवार को दुःख पहुँचता है। आपके परिवार में स्त्री का गर्भपात भी होता रहता है। यह भूमि आग्नेय दिशा (दक्षिण और पूर्व के मध्य) में है। यहीं से प्रेत की छाया पड़ती है। जिसकी यह भूमि है उसका कुल नष्ट हो चुका है। इसलिये आप इस प्रेत की पूजा करें। भूमि पर कब्ज़ा न करें और अपने कुलदेवता को मनाएँ। भला होगा। |
| --- | --- |

| 43 | होरा के अनुसार आपका घर किसी दूसरे की भूमि पर बना है। आपके घर का हर व्यक्ति व्याधिग्रस्त रहता है। आपने किसी व्यक्ति की कोई वस्तु छीनी है, इसलिये उसकी बददुआ लगी है। उसके क्रोध को शांत करें। इसके लिये आपको पहले भी किसी ने बताया था और आपने क्रोध शांत करने का संकल्प भी किया था। उससे मित्रता करें। मकान में इष्ट देव की पूजा करें तब आपको दुःस्वप्न आने भी बन्द हो जाएँगे। घर में शान्ति रहेगी। |
| --- | --- |

| 44 | होरा कहती है कि आपके परिवार में स्त्री को पीड़ा रहती है। जिस प्रकार तेल के बिना दीपक नहीं जलता, उसी प्रकार आपकी स्त्री भी दीपक की तरह बुझ सकती है अर्थात् मर सकती है, ऐसा लगता है। ज्येष्ठ मास में रविवार के दिन आपके बन्धु से आपकी पत्नी ने झगड़ा किया है और बन्धु ने क्रोधित होकर उस पर जादू करवाया है, इसी कारण स्त्री को पीड़ा रहती है। इसका उपाय करने के लिये आप सुपारी, चारमुख का दीपक, आटे का मेढ़ा और बकरी बनाकर, स्त्री पर वार कर दक्षिण दिशा में छोड़ दें और पेठे की बलि दें, तभी शांति होगी। |
| --- | --- |

| 45 | होरा के अनुसार ऐसा लगता है कि जो कार्य आपने सोचा है, उसमें किसी प्रकार के लाभ की आशा नहीं है। भारी कष्ट का सामना करना पड़ेगा। आपका अपने सम्बंधी के साथ विवाद है। इस विवाद के विषय में किसी भी पराए व्यक्ति पर विश्वास न करें। आपकी हत्या भी हो सकती है। आपके घर के सामने किसी ने ऐसा वृक्ष लगाया है जिससे आपको हानि होती है। आप इस वृक्ष को काट दें या पूजा करवाएँ तो भला होगा। |
| --- | --- |

| 46 | ऐसा दिखाई देता है कि जिस कार्य के होने की आपने आशा लगाई है, वह कार्य नहीं हो रहा है, जिससे आप दुःखी हैं। आपके परिवार में किसी व्यक्ति को पीड़ा रहती है। वह किसी काले जानवर के डरा है। जिस समय और स्थान पर वह डरा, उस समय वहाँ तीन व्यक्ति थे और कुछ व्यक्ति खेल रहे थे। उसके बाद तीसरे मास वह बीमार हो गया। उसके उपचार के लिये छागल व सुपारी से पूजा करें और ग्रहों की शांति के लिये पूजन करवाएँ तो सुख और शांति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 47 | ऐसा लगता है कि आपके घर में जो भी वस्तु आती है वह नष्ट हो जाती है। आपको पुत्र लाभ भी नहीं होता, केवल कन्या योग है, जिससे आपका मन दुःखी रहता है और आपकी स्त्री भी दुःखी है। इसका कारण यह है कि आपके घर में उत्तर दिशा की ओर एक कटा हुआ वृक्ष है जो आपके लिए हानिकारक है। इसी वृक्ष के कारण आपके घर कार्तिक मास में जीव की हत्या हुई है। आप उत्तर दिशा में वृक्ष के पास पत्थर गाड़ दें और घर में शांति पाठ करवाएँ। |
| --- | --- |

| 48 | ऐसा दिखाई देता है कि आपके भाग्य में सुख-शांति और महा आनन्द की प्राप्ति है। जिस कार्य के विषय में आप प्रश्न कर रहे हैं, वह पूर्ण होगा। किसी अच्छी वस्तु की प्राप्ति होगी। धन-धान्य का लाभ होगा। दो पुत्र होंगे और अकस्मात् धन की प्राप्ति होगी। |
| --- | --- |

| 49 | आपके मन में धन की चिन्ता है। आपको धन लाभ होगा, कार्य सिद्ध होगा। फाल्गुन मास में आपको जो हानि हुई, वह आपके बुरे कर्मों के फलस्वरूप हुई। आपको अकस्मात् धन लाभ होगा। कोई व्यक्ति आपसे ईर्ष्या करता है, उसे अपने मन की बात न कहें। वह आपके कार्य में बाधा डालता है। ऊपर लिखा धन लाभ दक्षिण दिशा की ओर से होगा, तब समझना कि यह वेद सत्य है। |
| --- | --- |

| 50 | आपके मन में जिस कार्य के लिये चिन्ता है उसे हाथ में न लें। कार्य सिद्ध नहीं होगा। बहुत दुःख प्राप्त हो सकता है। इस कार्य में मृत्यु तुल्य कष्ट हो सकता है। |
| --- | --- |

| 51 | जो प्रश्न आपने मन में विचारा है, उसकी सिद्धि के लिये आप दुर्गा देवी की पूजा करें। आपकी जो वस्तु खोई है वह तभी प्राप्त हो सकती है। देवी की पूजा से शुभ फल की प्राप्ति होगी। धन व पुत्रलाभ होगा। कार्य सिद्ध होगा। |
| --- | --- |

| 52 | होरा कहती है कि आप द्वारा सोचा गया कार्य सिद्ध होगा। शुभ फल की प्राप्ति होगी। सब प्रकार का लाभ होगा। सोचे गए कार्य में एक शत्रु बाधा डालने का प्रयत्न करेगा। उससे भयभीत न हों क्योंकि वह आपको हानि नहीं पहुँचा सकता। एक मित्र की सहायता से आपका कार्य सिद्ध होगा। मन प्रसन्न होगा। शत्रु मन में जलेगा और दुःखी होगा। आप अपने पितर की पूजा करें तो आपका शुभ होगा। |
| --- | --- |

| 53 | आपने जिस प्रश्न के बारे में सोचा है, वह किसी दूसरे का प्रश्न है, ऐसा लगता है। वह अपने ही कारण दुःखी है। उसे किसी भी शुभ फल की प्राप्ति नहीं होती। जिस कार्य को भी करना चाहता है वह सिद्ध नहीं होता। वह अन्न और धन के लिये दुःखी है। उसके मन में सन्देह है कि कार्य सिद्ध क्यों नहीं होता। यह सब कर्मों का फल है परन्तु आगे भाग्योदय होने के योग हैं। |
| --- | --- |

| 54 | जिस प्रकार मनुष्य जल के बीच डूबकर तड़पता है, उसी प्रकार आपका मन भी तड़प रहा है। ऐसा लगता है शत्रु आपसे विरोध करता है। अगर वह भलाई की बात भी करे तब भी विश्वास न करें! शत्रु आपका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाएगा। आपने कुल देवता की मनौती की है, उसे पूरा करने पर आपकी शत्रुता समाप्त हो सकती है। तब शत्रु भी आपका साथ देंगे और आपके कार्य सिद्ध होंगे। यह शत्रुता धन के कारण है। देवता की मनौती पूर्ण करने से धन भी प्राप्त होगा। आपकी मनोकामना पूर्ण होगी। |
| --- | --- |

| 55 | आपने जो सोचा है, ऐसा लगता है कि आपके परिवार में झगड़ा होता रहता है। आपके परिवार के सभी व्यक्तियों की बुद्धि मलिन है। आपने देवता की मनौती की थी, उसे पूर्ण करें। घर में यज्ञ करवाएँ तभी सुख-शांति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 56 | आपका कार्य पूर्ण होगा। आप अपने कुलदेवता की पूजा कर उसे सन्तुष्ट करें तो आपके मन को शांति मिलेगी। धन लाभ, स्त्रीलाभ तथा पशुधन लाभ होगा। अपने इष्ट देवता की भी पूजा करें तो शुभ होगा । |
| --- | --- |

| 57 | आप द्वारा सोचा गया कार्य ऐसा है जैसे शेर के मुखमें हाथ डालना । इस कार्य को हाथ में न लें । इस कार्य को करने से पौष मास तक आपको मृत्यु तुल्य कष्ट हो सकता है। क्योंकि यह कार्य सिद्ध नहीं होगा और ऐसा करने से पौष मास के मंगलवार को दोपहर बारह बजे तक व्यक्ति मर भी सकता है। |
| --- | --- |

| 58 | आपका कार्य सिद्ध होगा। कार्य में बहुत से शत्रु बाधा पहुँचाने का यत्न करेंगे परन्तु आपका कुछ भी बिगाड़ नहीं पाएँगे । आप इनके साथ अच्छे सम्बन्ध बनाएँ तो आपको लाभ होगा। धन लाभ व स्त्री लाभ के योग हैं। आपका भला होगा और बाद में पुत्र लाभ होगा। |
| --- | --- |

| 59 | जिस कार्य के प्रति आपके मन में चिन्ता है, वह चिन्ता आप छोड़ दें। धन लाभ होगा। जिससे आपका कार्य है उसे सन्तुष्ट करें। वह आपका निकट सम्बंधी है । वहाँ आपका एक शत्रु भी है। उससे भी अपने सम्बंध मधुर बनाएँ, तब आपका कार्य सिद्ध होगा। तब मानना कि वेद सत्य बोलता है। |
| --- | --- |

| 60 | आपने जो कार्य सोचा है वह तुरन्त फल देने वाला है। यदि आप इस कार्य में शीघ्रता करेंगे तो इसका फल विष के समान होगा, इसलिये वह कार्य शांत मन से करें। यदि वह कार्य सात मास के अन्दर पूरा होगा तो आपका भला होगा । |
| --- | --- |

| 61 | आपने जो कार्य सोचा है उसे सिद्ध समझें । एकचित्त होकर कार्य करें तो शीघ्र सफलता मिलेगी। आपने देवता की मनौती की थी । यदि उसे पूरा नहीं करेंगे तो स्त्री की हानि हो सकती है । देवता की पूजा करें तो सब कष्ट दूर होंगे, पुत्र लाभ होगा और सुख प्राप्त होगा । |
| --- | --- |

| 62 | आपका कार्य सिद्ध होगा। इस कार्य को यदि स्वयं करेंगे तो लाभ होगा। आपका भाग्योदय होने वाला है परन्तु शत्रु नहीं चाहते कि आपके अच्छे दिन आएँ । आप अपने देवता को सिद्ध करके इस कार्य को करें तो आपके विरोधी कुछ नहीं बिगाड़ सकेंगे। सूर्य की पूजा करें। सूर्य देव रक्षा करेंगे। |
| --- | --- |

| 63 | जो प्रश्न आपने सोचा है, वह भूमि के सम्बंध में है । इस भूमि को कई लोग पाना चाहते हैं, जिसका आपको पता नहीं है । इस सम्बंध में किसी ने अपने इष्ट को भी आपके पीछे लगाया है । |
| --- | --- |

| 64 | जिस कार्य के बारे में आपने सोचा है, उसमें आपका धन नष्ट हो सकता है। कार्य आरम्भ करने से पहले ब्राह्मण की पूजा करके ईशान दिशा (उत्तर और पूर्व के बीच ) में दूर्वा, शस्त्र तथा वस्त्र दान करें। किसी से विरोध न करें। यज्ञ करवाएँ। धर्मशाला बनवाएँ, तब आपको सुख-शान्ति मिलेगी और सभी कार्य सिद्ध होंगे। आगे राम जी की कृपा । |
| --- | --- |

भोट प्रश्नावली सम्पूर्ण

सिद्ध सकल्या होरा

| 1 | ईश्वर देवता सत्य कहता है कि आपका मन स्थिर नहीं है। एक कार्य पूरा होने से पहले ही आप दूसरे कार्य में हाथ डाल देते हैं। आपने देवता के निमित्त कोई वस्तु देने की मनौती की थी, उसे दे दें और देवता की पूजा करें। आपके सब कार्य सिद्ध होंगे और मन प्रसन्न रहेगा। आपको जो प्रेतभय है, उसके लिये छागल (झाड़ी विशेष) पूजा करें तो शुभ होगा। |
| --- | --- |

| 2 | सिद्ध सकल्या (ऐसी देवी जिसकी सिद्धि की है) सत्य कहती है कि आपको पश्चिम दिशा से प्रेत की छाया पड़ी है, इसीलिये परिवार में कष्ट आते हैं। आटे के बने मेढ़े और सूअर की बलि दें तो सुख मिलेगा और लाभ होगा। |
| --- | --- |

| 3 | गणपति देवता सत्य कहते हैं कि आपको सरकार की ओर से लाभ प्राप्त होगा। स्त्री को पुत्रलाभ होगा। आपके पाँच बन्धु हैं। सभी मिलकर भक्ति भाव से माघ मास में दान करें। आपके घर में स्त्री के पितर का कोप है। इसके निवारण हेतु चैत्र मास में जल के पास दान करें या पितर के नाम पर नल या सबील लगाएँ, तब सुख और लाभ होगा। |
| --- | --- |

| 4 | मेघ मालवा (मेघ देवता) सत्य कहता है कि आपका कार्य शुभ नहीं दिखाई देता। जिस प्रकार पत्ते के ऊपर पानी नहीं टिकता है, उसी प्रकार आपका मन भी चंचल है। आप पर प्रेत का प्रकोप है। आटे की बकरी बनाकर उसकी तथा अन्न की पूजा करें तो सुख व लाभ होगा। |
| --- | --- |

| 5 | पाण्डु देवता सत्य कहता है कि आपका मन भयभीत है। आपका भाग्य ठीक है। मनोकामना पूर्ण होगी। कार्य सिद्ध होंगे। मन को संतोष होगा। आपने देवता के प्रति कोई मनौती की थी, उसे पूर्ण करें तो आप भय मुक्त हो जाएँगे। धन-धान्य का लाभ होगा। |
| --- | --- |

| 6 | आदि देवता सत्य कहता है कि उत्तर दिशा में एक कटा हुआ वृक्ष है, जिसकी छाया पड़ने से आपके घर में अशान्ति है। आप अपने घर में उसकी पूजा करें। आपने अपने बन्धु के साथ शत्रुता की है, बन्धु निर्बल है। उसने क्रोधित हो कर आपके घर पर इस वृक्ष के पास से टोना किया है। आपके घर में स्त्री तथा बालक की हत्या हुई है। टोने के लिये उपाय करें। पितर की शान्ति के लिये तीर्थ स्थान में जाकर दान करें। बन्धु के साथ प्रेम करें, तो शांति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 7 | शारदा देवी सत्य कहती है कि आपके पीछे शत्रु लगा है जो आपके कार्य में बाधा डालता है। ऐसा लगता है कि आगे आपके कार्य सिद्ध होंगे। सरकार की ओर से लाभ होगा। अपनी श्रद्धानुसार देवता की पूजा या यज्ञ करवाएँ, तभी आपको सुख और शान्ति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 8 | नाग देवता सत्य कहते हैं कि आपके मन में कपट है। जिस प्रकार पत्ते पर पानी नहीं ठहरता, उसी प्रकार आपका मन भी स्थिर नहीं है। आपके शत्रु को हर प्रकार का लाभ है। आपका मन शुद्ध नहीं है, तभी आपके कार्य में बाधा पड़ती है। आपका शत्रु पूर्व दिशा में रहता है और आपका सम्बंधी है। उसके साथ अच्छे सम्बंध बनाएँ। घर में हवन करवाएँ, तभी आपको सुख और लाभ होगा। |
| --- | --- |

| 9 | माँ दुर्गा कहती है कि आपके मन में धन के विषय में चिन्ता है। एक मनुष्य आपसे रुष्ट है, वह आप पर क्रोध करता है। आप माँ दुर्गा की पूजा करें। एकचित्त होकर अपना कार्य करें तो उस व्यक्ति के बाधा डालने का कोई प्रभाव नहीं होगा। जैसे तेल के बिना दीपक नहीं जलता है, उसी प्रकार आपके परिवार में एक मनुष्य का जीवन भी समाप्त हो सकता है। उसको श्मशान के पास देवी का दोष लगा है। सुपारी, नारियल और पेठे की बलि दें। लाभ होगा। |
| --- | --- |

| 10 | रुद्र देवता सत्य कहता है कि आपके घर में जो कष्ट है, उसका कारण यह है कि पश्चिम दिशा में आपके घर पर प्रेत की छाया पड़ी है। आप देवता की पूजा करें। आपका कार्य सिद्ध होगा। धनलाभ होगा। देवता के निमित्त मनौती करें तो लाभ होगा व सुख प्राप्त होगा। |
| --- | --- |

| 1 | सूर्य देवता सत्य कहता है कि आपके घर में कलह इस कारण है कि आपका सम्बंधी आपके घर में फूट डालता है। आपके घर में एक व्यक्ति पीड़ित है। उसके लिये मास में श्मशान देवी माघ की करें और माश की बलि दें तो लाभ होगा व सुख प्राप्त होगा। |
| --- | --- |

| 12 | वामन देवता सत्य कहता है कि आपने स्त्री को जो वचन दिया, उसे नहीं निभाया। उस वचन को पूरा करें व देवता की मनौती करें। आपको सुख और शान्ति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 13 | पंचतीर्थ सत्य कहता है कि आपके कार्य सिद्ध होंगे। देवता की पूजा करें। पाँच मास के भीतर भूमि लाभ होगा। वहाँ पाँच व्यक्तियों के साथ बात करनी पड़ेगी तभी आपको भूमि लाभ हो सकता है। उस भूमि पर एक प्रेत का वास है, क्योंकि वहाँ एक स्त्री की हत्या हो चुकी है। स्त्री हत्या के निवारण हेतु पितर पूजा करें, पिण्डदान दें। प्रेत को भूमि से भगा दें, तभी आपको लाभ होगा। सुख मिलेगा। |
| --- | --- |

| 14 | वसुन्धरा देवी सत्य कहती है कि आपने देवता की मनौती की थी, वह आपसे पूरी नहीं हुई, इसलिये आपके घर में बालक की हत्या हुई। अन्न तथा धन का दान करें। काली देवी की पूजा करें। वस्त्र और अन्न दान करने से पुत्र लाभ होगा। सुख प्राप्त होगा। |
| --- | --- |

| 15 | ब्रह्मदेवता सत्य कहता है कि आपके कार्य में दो अन्य व्यक्ति भी सम्मिलित हैं। पूर्व जन्म के कर्मों के फल के कारण कार्य में बाधा पड़ती है। लोगों के लिये प्याऊ लगवाएँ। चार वस्तुएँ (अन्न-धन-वस्त्र-गो) दान करें। काली पूजा करें। ब्राह्मण को वस्त्रदान दें। इष्ट देवी की पूजा करें तो शुभ होगा। |
| --- | --- |

| 16 | सरस्वती देवी सत्य कहती है कि आपने मन में जिस कार्य के विषय में सोचा है, वह पूर्ण होगा। ब्राह्मण की पूजा करें। गुड़-तिल का दान दें, तब आपको सुख मिलेगा। देवता की मनौती करें तो आपको स्त्री और वस्त्र का लाभ होगा। |
| --- | --- |

| 17 | विष्णु देवता सत्य कहता है कि आपके घर में हर वस्तु का लाभ है। देवता के निमित्त कोई वस्तु देने का आपने संकल्प किया था, उसे शुद्ध मन से देवता को अर्पित करें, आपका भला होगा कार्य सिद्ध होंगे। |
| --- | --- |

| 18 | सिद्ध सकल्या सत्य कहती है कि राजकार्य से लाभ होगा। घर में किसी एक व्यक्ति पर प्रेत की छाया पड़ी है, जिससे उसे बहुत कष्ट मिलता है। श्मशान के प्रेत और देवी का कोप है। आटे के चार सर्प बनाकर उनकी पूजा करें तो भला होगा। |
| --- | --- |

| 19 | केदार देवता सत्य कहता है कि आप पर उत्तर दिशा से प्रेत की छाया पड़ी है। माघ मास में पाँच वस्तुओं की बलि देकर पूजा करें और प्याऊ लगाएँ। आपके घर में स्त्री और बालक की हत्या हुई है, जिनका पितृदोष लगा है। तीर्थस्थान में पिण्डदान करें। तब आप जिस वस्तु की कामना करेंगे, वह पूर्ण होगी। धन का लाभ होगा। राजकार्य से भी लाभ होगा। |
| --- | --- |

| 20 | आदित्य देवता सत्य कहता है कि आपको सरकार की ओर से लाभ होगा। धन-धान्य व पुत्रलाभ होगा। आप पर प्रेत की छाया भी पड़ी है। प्रेत तथा देवी की दूध और खीर से पूजा करें तो शारीरिक सुख प्राप्त होगा। |
| --- | --- |

|  |
| --- |

सिद्ध सकल्या होरा सम्पूर्ण

अबजादी होरा

| अअअ | हे मनुष्य! जो प्रश्न तू पूछ रहा है उसके विषय में ठीक तरह सुन। मैं कह रहा हूँ जो तू चाहता है, तेरा कार्य सिद्ध होगा। अपने देवता की पूजा कर, तेरे शत्रु का नाश होगा और कार्य सिद्ध होंगे। |
| --- | --- |

| अअब | हे पूछने वाले मनुष्य! मैं कहता हूँ। तू दोनों कानों से सुन। तेरे मन में जिस कार्य की इच्छा है उसे शुरू कर। वह सिद्ध होगा। |
| --- | --- |

| अअज | हे मनुष्य! जिस कार्य के बारे में तू प्रश्न कर रहा है वह कार्य सिद्ध होगा। दान पुण्य करने से आपका कार्य सिद्ध होगा, मान बढ़ेगा और मन का दुःख मिट जाएगा। |
| --- | --- |

| अअद | पूछने वाले मनुष्य! तेरा मन स्थिर नहीं है, इसलिये तेरा कार्य पूर्ण होना कठिन है। सोचे गए कार्य को करने से तुझे कष्ट उठाना पड़ेगा, इसलिये इस कार्य को छोड़ दे। |
| --- | --- |

| अबअ | पूछने वाले मनुष्य! तू सुन ले। यह कार्य कठिन है। इसे पूरा होने में काफी समय लगेगा। आपका कार्य लम्बे समय के बाद पूरा होगा और उसमें सफलता प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| अबब | हे पूछने वाले पुरुष! तू दोनों कानों से सुन मैं कहता हूँ कि तेरा कार्य सिद्ध होगा। कोई शुभ समाचार सुनने को मिलेगा जो तेरे लिये लाभकारी होगा। मन प्रसन्न होगा परन्तु कुछ शंका रहेगी। |
| --- | --- |

| अबज | हे पूछने वाले मनुष्य! मैं कहता हूँ, तू सुन ले। दान-धर्म करने से तेरा कार्य सिद्ध होगा परन्तु तू इस कार्य को शीघ्र कर ले। तेरा कार्य पूर्ण होगा। |
| --- | --- |

| अबद | हे पूछने वाले मनुष्य! तू इस कार्य को खुशी से कर। तेरा कार्य सिद्ध होगा। |
| --- | --- |

| अजअ | हे पूछने वाले पुरुष! तेरे द्वारा सोचा गया कार्य ठीक नहीं है। यह कार्य पूरा नहीं हो सकता। इस कार्य के करने से आपको धोखा मिलेगा और शान्ति प्राप्त नहीं होगी। |
| --- | --- |

| अजब | हे पूछने वाले पुरुष! जिस कार्य को करने की तू हठ कर रहा है उसे छोड़ दे। तेरा कार्य सिद्ध नहीं होगा। तू मान या न मान, यह कार्य तेरे वश का नहीं है। यदि कार्य कर सकता है तो लाभ हो सकता है। |
| --- | --- |

| अजज | हे पूछने वाले मुनष्य! तेरा एक शूद्र मित्र है जो तेरा काम बिगाड़ेगा। इसलिये तेरा यह काम पूरा नहीं हो सकता। |
| --- | --- |

| अजद | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा कार्य सिद्ध होगा। देव भी आपकी रक्षा करेगा। |
| --- | --- |

| अदअ | हे पूछने वाले मनुष्य! मन में दृढ़ निश्चय करके कार्य आरम्भ कर। कार्य सिद्ध होगा। इस कार्य में तुझे धन की प्राप्ति होगी या भाग्यवान् स्त्री से लाभ होगा। मन संतुष्ट रहेगा। |
| --- | --- |

| अदब | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा यह कार्य सिद्ध हो सकता है, लेकिन तेरी कुमति से यह कार्य पूर्ण नहीं होगा। |
| --- | --- |

| अदज | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा यह कार्य सिद्ध होगा और उसमें तुझे लाभ होगा! एक शत्रु इसमें बाधा डाल सकता है। उससे मेल न करें। उसे अपनी कोई बात न बताएँ। आपका आगे का समय अच्छा दिखाई देता है और आपको कहीं से धन की प्राप्ति हो सकती है। |
| --- | --- |

| अदद | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा यह कार्य ऐसा है जैसे शेर के साथ जूझना। कोई गरीब व्यक्ति तेरा शत्रु होगा जो तेरा कार्य बिगाड़ने का प्रयत्न करेगा। किसी से चुगली करके इस कार्य में बाधा डालेगा। |
| --- | --- |

| बअअ | हे पूछने वाले मनुष्य! इस कार्य के पूर्ण होने में कठिनाई है। यह कार्य ऐसा दिखाई देता है जैसा मनुष्य का जल में डूब जाना। अतः आपका यह कार्य सिद्ध नहीं होगा। |
| --- | --- |

| बअब | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा यह कार्य अत्यंत कठिन है। इस कार्य के पीछे तेरे बहुत से शत्रु बन गए हैं, जो इस कार्य को बिगाड़ेंगे। अतः तेरा यह कार्य पूर्ण नहीं होगा। |
| --- | --- |

| बअज | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरे द्वारा सोचा गया कार्य ठीक नहीं है।जिस कार्य को तू अभी कर रहा है, वही कार्य कर। उसी में मन लगा। कार्य सिद्ध होगा और सुख की प्राप्ति होगी। |
| --- | --- |

| बअद | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा यह कार्य सिद्ध होगा, इसमें दो राय नहीं है। घबराना मत। मन बेचैन न कर। यह कार्य सिद्ध होगा! हे पूछने वाले मनुष्य! इस कार्य के पूर्ण होने की आशा न कर। इसमें शत्रु बाधा डालेगा। इस कार्य को न कर, इसमें तुझे लाभ नहीं होगा। उपाय करने पर भी कार्य की सिद्धि नहीं होगी! |
| --- | --- |
| बबअ | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा बिगड़ा हुआ कार्य सिद्ध होगा। यह बात शत प्रतिशत सच है। |
| बबब | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा यह कार्य सिद्ध होगा। मन के भय को त्यागकर शुद्ध मन से कार्य कर। |
| बबज | हे पूछने वाले मनुष्य! तूने जो कार्य सोचा है वह बहुत बड़ा है, तुझ अकेले से नहीं होगा। इसमें तेरा मित्र तेरी सहायता करेगा, फिर भी यह कार्य ढीला पड़ जाएगा। यह कार्य बड़ा कठिन है, होने की सम्भावना नहीं है। |
| बजअ | हे पूछने वाले मनुष्य! इस कार्य से तुझे स्त्री का लाभ होगा। कार्य कठिनता से सिद्ध होगा। काफी दुःख भी मिलेगा। आपका मन उचट जाएगा। तेरी इच्छा अधूरी रहेगी। धैर्य रखें। सोचा गया कार्य सिद्ध होगा। |
| बजब | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा मन चंचल है। मन की चंचलता को छोड़ दें तो आपका कार्य सिद्ध होगा। आपके शत्रु का नाश होगा। |
| बजज | हे पूछने वाले मनुष्य! तू जिस कार्य के बारे में सोच रहा है, पूर्ण होगा। इस कार्य को सोच-विचार कर करना होगा। साथ ही अपने देवता को भी मनाना होगा, तब कार्य सिद्ध होगा। |
| बजद | हे पूछने वाले मनुष्य! यह कार्य बड़ा कठिन है। कार्य पूरा नहीं होगा। यह कार्य किसी दूसरे का लगता है जो सिद्ध नहीं होगा। |
| बदअ | हे पूछने वाले मनुष्य! यह कार्य कठिन है। इसके लिये तुझे काफी दिनों तक कष्ट भोगना पड़ेगा, इसलिये इस कार्य को करने का हठ छोड़ दे। जैसे लोहे की वस्तु पानी में डूब जाती है इसी तरह आपका कार्य भी पूरा नहीं होगा। |
| बदब | हे पूछने वाले मनुष्य! यह कार्य बड़ा कठिन है। इस कार्य के होने की आशा बिल्कुल मत कर। तेरे बनते कार्य को दुश्मन बिगाड़ देगा। तेरे बहुत दुश्मन हैं इसलिये कार्य पूरा नहीं होगा। |
| बदज | हे पूछने वाले मनुष्य! जिस कार्य की तेरे मन में चिन्ता है, तू उसे आरम्भ कर। तेरा कार्य पूर्ण होगा। मन में संतोष होगा। किसी दूसरे के कार्य में बाधा न डालना अन्यथा तेरे कार्य में भी बाधा आ सकती है। अपने कार्य को एकचित्त होकर कर, सफलता मिलेगी। |
| बदद | हे पूछने वाले मनुष्य! अपना कार्य शुद्ध मन से कर। यह कार्य अनेक कष्ट झेलने पर काफी दिनों के बाद सिद्ध होगा। |
| जअअ | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरे द्वारा सोचा गया कार्य कठिन है, कार्य पूर्ण नहीं होगा। तू जिस काम में लगा है, वही कर। राम भजन कर तो शुभ होगा। |
| जअब | हे पूछने वाले मनुष्य! आपका कार्य शुभ है। इस कार्य को करने से आपको सुख प्राप्त होगा, आनन्द मिलेगा। तेरा भला होगा और लाभ प्राप्त होगा। |
| जअज | हे पूछने वाले मनुष्य! यह कार्य बड़ा कठिन है। कार्य पूर्ण नहीं होगा। दुःख भोगना पड़ेगा। लम्बे समय के बाद, कष्ट उठाकर अगर हो भी गया तो तुझे पितृ दुःख मिलेगा। |
| जअद | हे पूछने वाले मनुष्य! तू राम नाम का जाप कर, तभी तेरे कार्य सिद्ध होंगे। |
| जजअ | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरे कार्य में कुछ विलम्ब है। इस कार्य को करने की पूरी कोशिश कर, तभी तेरा कार्य सिद्ध होगा और मन को संतोष मिलेगा। |
| जजब | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा कार्य कठिन है। जिस प्रकार तेल के बिना दीपक, आग के बिना बाती नहीं जलती, उसी प्रकार आपका कार्य यत्न किये बिना सिद्ध नहीं होगा। |
| जजज | हे प्रश्नकर्ता! तेरा अभिष्ट कार्य सिद्ध होगा। अपने इष्ट देव की पूजा कर। इस कार्य को करने से तुझे चन्द्रमा की भाँति प्रकाश प्राप्त होगा। परिवार में शान्ति रहेगी। हर मनुष्य से प्रेम बढ़ेगा। शत्रु पर विजय प्राप्त होगी। |
| जजद | हे पूछने वाले मनुष्य! अपने इष्ट देवता की पूजा कर। मन का क्रोध मिटेगा। कार्य सिद्ध होगा। मनोकामना पूर्ण होगी। |

| जदअ | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा कार्य कठिन है। इस कार्य को करने से भय पैदा होगा। मित्र ही तेरा शत्रु बन जाएगा और इस कार्य में बाधा डालेगा। |
| --- | --- |

| जदब | हे प्रश्नकर्ता! इस कार्य को करने से तुझे सरकार की ओर से लाभ प्राप्त होगा। कार्य को एकचित्त होकर कर। कार्य सिद्ध होगा। |
| --- | --- |

| जदज | हे पूछने वाले मनुष्य! आपके कार्य सिद्ध होंगे। आपकी स्त्री को भी सुख प्राप्त होगा। प्रभु आपका साथ देंगे। आपका भला होगा। |
| --- | --- |

| जदद | हे प्रश्नकर्ता! तेरे बहुत से शत्रु हैं। उन पर विश्वास न करना। तेरा कार्य लम्बे समय के बाद सिद्ध होगा। |
| --- | --- |

| अदअ | हे पूछने वाले मनुष्य! अपने मन को एकाग्र कर। तुझे हर प्रकार का लाभ होगा। बहुत सुख पाएगा। |
| --- | --- |

| दअब | हे पूछने वाले मनुष्य! बहुत दिनों तक कष्ट भोगना पड़ेगा। तब पुत्र की प्राप्ति होगी। मनोकामना पूर्ण होगी। मन प्रसन्न रहेगा। बाद में दिन अच्छे व्यतीत होंगे। |
| --- | --- |

| दअज | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरी किसी अच्छे व्यक्ति से मित्रता होगी। सरकार की ओर से सम्मान प्राप्त होगा। सुख मिलेगा। स्त्री और धन लाभ होगा। |
| --- | --- |

| दअद | हे प्रश्नकर्ता! यह कार्य कठिन है, पूर्ण नहीं होगा। आप इस कार्य की सिद्धि के लिये जो परिश्रम कर रहे हो वह विफल होगा, क्योंकि कार्य बनते-बनते भी बिगड़ जाएगा। |
| --- | --- |

| दबअ | हे पूछने वाले मनुष्य! इस कार्य को करने से आपका विवाद हो सकता है। मेरा कहना मान, वाद-विवाद को बढ़ावा न दे, तो कार्य सिद्ध हो सकता है। |
| --- | --- |

| दबब | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरे कार्य को एक व्यक्ति बिगाड़ सकता है, जो तुझसे शत्रुता रखता है। देव और पितृदोष भी है लेकिन फिर भी आपको अच्छी वस्तु की प्राप्ति होगी और मन को संतोष होगा। |
| --- | --- |

| दबज | हे पूछने वाले मनुष्य! अपने सोचे गए कार्य के प्रति शंका न करें। कार्य सिद्ध होगा। आपकी चिंता मिटेगी और लाभ होगा। |
| --- | --- |

| दबद | हे पूछने वाले मनुष्य! प्रत्येक व्यक्ति से तेरे अच्छे सम्बंध बनेंगे और मन संतुष्ट रहेगा। |
| --- | --- |

| दजअ | हे पूछने वाले मनुष्य! आपका मन चिंताग्रस्त है। चंचलता छोड़ दें। हर कार्य को एकाग्रचित्त से करें। सभी कार्य सिद्ध होंगे। |
| --- | --- |

| दजब | हे पूछने वाले मनुष्य! जिस कार्य को करने की आपकी इच्छा है, उस कार्य को करने के लिये यह समय ठीक नहीं है, इसलिये कार्य आरम्भ न करें। अगर इस कार्य को आरम्भ करोगे तो आपका शत्रु कार्य पूर्ण नहीं होने देगा। |
| --- | --- |

| दजज | हे पूछने वाले मनुष्य! एकाग्र होकर सुन लें, आपका कार्य सिद्ध होगा। इस कार्य से आपको लाभ होगा और मन संतुष्ट होगा। धन लाभ भी होगा। |
| --- | --- |

| दजद | हे पूछने वाले मनुष्य! आपका कार्य पूर्ण होने में शंका है। काफी प्रयत्न करने से तथा किसी दूसरे व्यक्ति की सहायता से कार्य सिद्ध हो सकता है और चिंता दूर होगी। |
| --- | --- |

| ददअ | हे पूछने वाले मनुष्य! आपका कार्य सिद्ध होगा। आपके मन में जो भय है कि शत्रु इस कार्य में विघ्न डालेगा, यह निरर्थक है। शत्रु कार्य नहीं बिगाड़ सकेगा। वह कार्य में बाधा डालने में सफल नहीं होगा। आपका कार्य अवश्य पूर्ण होगा। |
| --- | --- |

| ददब | हे पूछने वाले मनुष्य! आपका कार्य बड़ा कठिन है। इस कार्य को आरम्भ करने का अर्थ है शेर के मुख में हाथ डालना, इसलिये इस कार्य को मत करें। |
| --- | --- |

| ददद | हे पूछने वाले मनुष्य! तेरा कार्य शीघ्र पूर्ण होगा। सुख प्राप्त होगा। कार्य के मध्य में कोई व्यक्ति आपकी सहायता करेगा, तब आपका कार्य सिद्ध होगा। आपको सुख-शान्ति प्राप्त होगी। मनवांछित फल प्राप्त होगा। देवता आपसे रुष्ट है। उसकी पूजा करके उसे संतुष्ट करें। आपके सभी कार्य सिद्ध होंगे। आगे राम जाने। |
| --- | --- |

| जबअ | हे पूछने वाले मनुष्य! तू हठ न कर। दूसरे की बात में न आना। अपने मित्र की बात पर विश्वास करके कार्य आरम्भ कर, तभी तुझे कार्य में सफलता मिलेगी। |
| --- | --- |

| जबब | हे पूछने वाले मनुष्य! कार्य में सफलता मिलेगी, मन वांछित फल प्राप्त होगा। आपका कुलदेवता भी आपकी रक्षा करेगा। प्रसन्नचित्त होकर उसकी पूजा करें। तेरा कार्य सिद्ध होगा। |
| --- | --- |

| जबज | हे पूछने वाले मनुष्य । तेरा कार्य बड़ा कठिन है, यह सिद्ध नहीं होगा! आपके बहुत से दुश्मन हैं। आपके अपने मित्र भी शत्रु का साथ देते हैं। इसलिए यह कार्य पूर्ण नहीं होगा । |
| --- | --- |

| जबद | हे पूछने वाले मनुष्य ! धैर्य रख । तेरा कार्य सिद्ध होगा । देवता तथा पितर का कोप है। उनकी पूजा कर तब कार्य सिद्ध होगा । |
| --- | --- |

इति सिद्धम् अबजादि होरा समाप्त

*दजअ के बाद की चार होरा - दजब, दजज दजद, तथा ददअ उपलब्ध पाण्डुलिपि में नहीं है, जो मूल पाण्डुलिपि में है, अतः इनका अनुवाद करना यहाँ उचित समझा गया है।*

*मूल पाण्डुलिपि के अनुसार जबअ, जबब जबद, तथा जबद की होरा का स्थान जअद के बाद है ।*

| 1 | मेष लग्न में नीच स्त्री मिली। दूसरे चरण में आपने किसी स्त्री से बात की। उस समय तीन व्यक्ति उपस्थित थे। तीसरे चरण में ब्राह्मण मिला। चौथे चरण में कोई गरीब आदमी मिला। |
| --- | --- |

| 2 | वृष लग्न में प्रथम चरण में धन सहित शूद्र मिला। दूसरे चरण में गाय मिली। तीसरे चरण में कुत्ता मिला। चौथे चरण में स्त्री ने आपसे यह बात कही कि मेरी तरफ से प्रश्न करना। |
| --- | --- |

| 3 | मिथुन लग्न में पहले निम्न जाति के व्यक्ति से बात की। दूसरे चरण में स्त्री सामने आई। तीसरे चरण में कुछ रोगी मिला। चौथे चरण में तीन या पांच व्यक्ति मिले। |
| --- | --- |

| 4 | कर्क लग्न में पहले आपको सरकारी कर्मचारी मिला। उसके साथ कुछ लेन-देन किया। दूसरे चरण में नीच आदमी सामने आया, जिसमें आपकी शत्रुता है। तीसरे चरण में स्त्री और धन मिला। चौथे चरण में मृग मिला। |
| --- | --- |

| 5 | सिंह लग्न में पहले परिवार में वाद-विवाद हुआ। दूसरे चरण में आपका मन घबराया। तीसरे चरण में चौपाया और कुटिल स्त्री मिली। चौथे चरण में पांच व्यक्ति मिले जिनमें तीन दूसरी जाति के थे। |
| --- | --- |

| 6 | कन्या लग्न में पहले सन्त मिला, साथ में नीच व्यक्ति भी था, उस समय कौआ भी बोला। दूसरे चरण में सामने मकान दिखाई दिया, उस समय आपके हाथ में अन्न था। तीसरे चरण में पक्षी बोला जिसका मुख पूर्व की ओर था, आपके पास किसी दूसरे की वस्तु थी। चौथे चरण में नीच कर्म देखा। |
| --- | --- |

| 7 | तुला लग्न में पहले चरण में घर में वाद-विवाद हुआ। दूसरे चरण में चोरी की बात सुनी या देखी हुई। तीसरे चरण में। |
| --- | --- |

| 8 | पहले चरण में कोइ के दर्शन हुआ। दूसरे चरण में स्त्री से बात हुई। तीसरे चरण में आपने दूध-दही का मटिया या सामने मंदिर दिखाई दिया। चौथे चरण में कोई मनुष्य मिला। आपके घर में ब्राह्मण जाति का प्रतीक है। |
| --- | --- |

| 9 | धनु लग्न में आपने देवता के दर्शन किये फिर धन का लेन-देन हुआ। दूसरे चरण में स्त्री के विषय में लघु के साथ वाद-विवाद हुआ। तीसरे चरण में चार या चोरी की बात सुनी। चौथे चरण में पश्चिम की दिशा में दो आदमी चलते हुए दिखाई दिए। |
| --- | --- |

| 10 | मकर लग्न में पहले सरकारी कर्मचारी या नेता मिला। काले रंग की गाय मिली। शत्रु भी मिला। दूसरे चरण में महात्मा के दर्शन हुए। तीसरे चरण में पैशा मिला या मायागा स्त्री मिली। चौथे चरण में किसी के साथ वाद-विवाद हुआ। |
| --- | --- |

| 11 | कुम्भ लग्न में चलते हुए पहले देव दर्शन हुआ। दूसरे चरण में सामने आपका दुश्मन मिला या चार व्यक्ति मिले। तीसरे चरण में किसी मित्र की स्थापना दिखाई दी। चौथे चरण में धन मिला। |
| --- | --- |

| 12 | मीन लग्न में चलते समय पहले चरण में कुत्ता नहीं मिला। दूसरे चरण में चौपाया (घोड़ा-चक्कल) मिला। तीसरे चरण में आगे कुछ पीछे हटे और मन घबराया। चौथे चरण में आपने मांस खाया। |
| --- | --- |

यात्रा पर जाने के वार शकुन

आदित्य (रविवार) के दिन दाहिनी ओर काँटे वाला एक वृक्ष दिखाई दिया। सोमवार कहता है कि कुलटा स्त्री ने बात की। मंगलवार बोलता है कि आपको अछूत स्त्री मिली। बुधवार बोलता है कि आपको कौआ मिला। वीरवार बोलता है कि आपको कोई शत्रु मिला। शुक्रवार बोलता है कि अंगहीन मिला। शनिवार बोलता है कि अन्न का लाभ हुआ या नीच जाति के व्यक्ति के दर्शन हुए ।

| 1 | मेष लग्न में ब्रह्मा पूछता है और देवता कहता है, अद्धलाभ होगा। धन-धान्य की पूजा करें तब आपके घर में सुख-शांति होगी। |
| --- | --- |

| 2 | वृष लग्न में विष्णु पूछता है और नारद कहता है कि आपको हर वस्त्र का लाभ होगा। शत्रु का नाश होगा और आपके घर में सुख-शांति होगी। |
| --- | --- |

| 3 | मिथुन लग्न में इन्द्र पूछता है और मंत्री कहता है कि आपके घर में हर वस्तु का लाभ होगा। घर में सुख और शांति रहेगी। परिवार में किसी को मान प्रतिष्ठा मिलेगी। आपके मन को शांति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 4 | कर्क लग्न में बुध राशि पूछता है और जन्मनिय राशिफल कहता है कि आपको लाभ होगा। अखंड फल प्राप्त होगी। इस बात को सत्य मानो। आपको सुख-प्राप्त होगा। |
| --- | --- |

| 5 | सिंह लग्न में तृतु पूछता है और धर्मराज कहता है कि आपको घर की चिन्ता है। देवी की पूजा करो और सत्य समझो कि आपको सुख प्राप्त होगा। |
| --- | --- |

| 6 | कन्या लग्न में देवता देवता पूछता है और पुरुष कहता है कि आपको लाभ होगा और लाभ होने से सुख और शांति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 7 | तुला लग्न में नारि पूछती है और सूर देव कहता है कि लाभ होगा और सुख मिलेगा। इस बात को सत्य जानो। परिवार में सुख और शांति रहेगी। |
| --- | --- |

| 8 | वृश्चिक लग्न में इन्द्र पूछता है और गौतम राशि कहता है कि सत्य मानो आपका कार्य सफल होगा और परिवार में सुख और शांति होगी। |
| --- | --- |

| 9 | धनु लग्न में विचारमन्त्र पूछता है और सत्तदेव कहता है कि आप कुएलवा की पूजा करो। सत्य मन से काम करो तो सुख और शांति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 10 | मकर लग्न में स्त्री कहती है कि अच्छे कर्म करो और अपने हाथ में दान करो तो घर में सुख और शांति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 11 | कुम्भ लग्न में ब्राह्मण पूछता है और राशि कहता है कि मन में जो चिन्ता है, वह दूर होगी। बघु के साथ मेल होगा। कार्य सिद्ध होगा और सुख मिलेगा। |
| --- | --- |

| 12 | मीन लग्न में सरस्वती पूछे और वसिता कहें कि एकाग्रचित्त हो कार्य करो। सुख मिलेगा, मित्रों से मेल होगा। आपके मन में जो हर्ष है उसे छोड़ दें तभी आपके कार्य सफल होंगे। परिवार में सुख-शांति होगी। धन-धान्य, वस्त्र, पुत्र और योग्य लाभ होगा। |
| --- | --- |

| 1 | मेष लग्न में ब्रह्मा पूछता है और देवता कहता है, अद्धलाभ होगा। धन-धान्य की पूजा करें तब आपके घर में सुख-शांति होगी। |
| --- | --- |

| 2 | वृष लग्न में विष्णु पूछता है और नारद कहता है कि आपको हर वस्त्र का लाभ होगा। शत्रु का नाश होगा और आपके घर में सुख-शांति होगी। |
| --- | --- |

| 3 | मिथुन लग्न में इन्द्र पूछता है और मंत्री कहता है कि आपके घर में हर वस्तु का लाभ होगा। घर में सुख और शांति रहेगी। परिवार में किसी को मान प्रतिष्ठा मिलेगी। आपके मन को शांति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 4 | कर्क लग्न में बुध राशि पूछता है और जन्मनिय राशिफल कहता है कि आपको लाभ होगा। अखंड फल प्राप्त होगी। इस बात को सत्य मानो। आपको सुख-प्राप्त होगा। |
| --- | --- |

| 5 | सिंह लग्न में तृतु पूछता है और धर्मराज कहता है कि आपको घर की चिन्ता है। देवी की पूजा करो और सत्य समझो कि आपको सुख प्राप्त होगा। |
| --- | --- |

| 6 | कन्या लग्न में देवता देवता पूछता है और पुरुष कहता है कि आपको लाभ होगा और लाभ होने से सुख और शांति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 7 | तुला लग्न में नारि पूछती है और सूर देव कहता है कि लाभ होगा और सुख मिलेगा। इस बात को सत्य जानो। परिवार में सुख और शांति रहेगी। |
| --- | --- |

| 8 | वृश्चिक लग्न में इन्द्र पूछता है और गौतम राशि कहता है कि सत्य मानो आपका कार्य सफल होगा और परिवार में सुख और शांति होगी। |
| --- | --- |

| 9 | धनु लग्न में विचारमन्त्र पूछता है और सत्तदेव कहता है कि आप कुएलवा की पूजा करो। सत्य मन से काम करो तो सुख और शांति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 10 | मकर लग्न में स्त्री कहती है कि अच्छे कर्म करो और अपने हाथ में दान करो तो घर में सुख और शांति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| 11 | कुम्भ लग्न में ब्राह्मण पूछता है और राशि कहता है कि मन में जो चिन्ता है, वह दूर होगी। बघु के साथ मेल होगा। कार्य सिद्ध होगा और सुख मिलेगा। |
| --- | --- |

| 12 | मीन लग्न में सरस्वती पूछे और वसिता कहें कि एकाग्रचित्त हो कार्य करो। सुख मिलेगा, मित्रों से मेल होगा। आपके मन में जो हर्ष है उसे छोड़ दें तभी आपके कार्य सफल होंगे। परिवार में सुख-शांति होगी। धन-धान्य, वस्त्र, पुत्र और योग्य लाभ होगा। |
| --- | --- |

बारह लग्नों के शकुन

| 1 | मेष लग्न में आपको निम्न जाति के मनुष्य के दर्शन हुए। |
| --- | --- |

| 2 | वृष लग्न में चार मनुष्य मिले। |
| --- | --- |

| 3 | मिथुन लग्न में परिवार की स्त्री मिली। |
| --- | --- |

| 4 | कर्क लग्न में बाघ की आवाज़ सुनाई दी या बाघ की बात हुई। |
| --- | --- |

| 5 | सिंह लग्न में उत्तम पुरुष से भेंट हुई। |
| --- | --- |

| 6 | कन्या लग्न में ब्राह्मण की पाँच कन्याएँ मिलीं। |
| --- | --- |

| 7 | तुला लग्न में लाल वस्त्र या मनुष्य मिला। |
| --- | --- |

| 8 | वृश्चिक लग्न में बाघ, शेर या साँप मिला। |
| --- | --- |

| 9 | धनु लग्न में मिस्त्री या नाई मिला और धन की बात चली। |
| --- | --- |

| 10 | मकर लग्न में अपने ही गोत्र की कृष्ण वर्ण की कोई स्त्री मिली। |
| --- | --- |

| 11 | कुम्भ लग्न में शाकिनी (डायन) मिली। |
| --- | --- |

| 12 | मीन लग्न में सर्प मिला या कोई शस्त्रधारी मनुष्य मिला। |
| --- | --- |

**इति बारह लग्नों के शकुन सम्पूर्ण**

| मेष | लग्न कहता है कि आपको कुलदेवता का दोष है, जिससे धन-धान्य का नाश तथा परिवार में बार-बार किसी व्यक्ति को पीड़ा होती है, ऐसा दिखता है। आपके लिये शुभ दिखाई नहीं देता। स्त्री के लिये मृत्यु तुल्य कष्ट है। आप आग्नेय दिशा में देवी की स्थापना करके देवी की पूजा करें। तब आपके परिवार में शांति होगी। |
| --- | --- |

| वृष | लग्न कहता है कि आपको छिद्रा (भूत-प्रेत) दोष है। आपके घर में किसी को पेट में पीड़ा रहती है। आपके शरीर पर एक चिह्न है, जो आपके लिये अशुभ है। इससे आपको बार-बार कष्ट उठाना पड़ता है, इस बात को आप झूठ न समझें। चिह्न के प्रभाव के निवारण हेतु पूजा करें और भूत को भगाएँ, तब आपके कार्य शुभ होंगे। परिवार में शांति होगी। |
| --- | --- |

| मिथुन | लग्न कहता है कि आपके घर में स्त्री को पीड़ा रहती है। पुत्र के वियोग में स्त्री चिंतित है। आपकी पत्नी को किसी स्त्री की कुदृष्टि पड़ने से सन्तान होकर भी न होने के बराबर है। मन में शांति नहीं है। बुद्धि भ्रष्ट हो रही है। भूत-प्रेत को भगाएँ। कुदृष्टि के लिये दूध-दही से देवी की पूजा करें तो शुभ होगा। |
| --- | --- |

| कर्क | लग्न कहता है कि बेताल का दोष है जो पश्चिम दिशा में है। घर में किसी न किसी को पीड़ा रहती है। इस कारण आपका मन दुःखी रहता है, आप पर देवी का कोप है। श्रद्धा भक्ति से देवी की पूजा करें, जप करवाएँ, तब परिवार में सुख होगा और शांति होगी। |
| --- | --- |

| सिंह | लग्न कहता है कि आपको इष्ट का कोप है, इसलिये आपके परिवार में अशांति है। धन की हानि होती है। यह इष्ट आप द्वारा पूजित न होने के कारण रुष्ट है। इष्ट के कोप के कारण कोई भूत बनकर आपके परिवार को हानि पहुँचाता है। इसलिये इष्ट और क्षेत्रपाल की पूजा करें, तब परिवार में सुख व शांति होगी। |
| --- | --- |

| कन्या | लग्न कहता है कि आपको ब्राह्मण जाति की शाकिनी (डाकिनी) का दोष है। परिवार में किसी को पेट में पीड़ा रहती है। यह डाइन आपके निकट की ही है। इसके साथ ही प्रेत का भी दुःख है। प्रेत को भगाने का उपाय करें। डाकिनी के कोप को उलटा दें, तब परिवार में सुख और शांति होगी। |
| --- | --- |

| तुला | लग्न कहता है कि परिवार में जो कष्ट है वह देवी के कोप के कारण है। आपके घर में किसी न किसी प्रकार की हानि होती रहती है। दूध, दही और चावल से देवी की पूजा करें। भूत का भी दुःख है। इसे भगाने का उपाय करें। चण्डी की पूजा करें, तब आपको शांति मिलेगी। |
| --- | --- |

| वृश्चिक | लग्न कहता है कि जो आपके घर में धन-धान्य की हानि होती है, वह कुलदेवता के कोप के कारण है, इसलिये आप अपने कुलदेवता की पूजा करें। सत्यनारायण की पूजा करें, तब परिवार में धन-धान्य का लाभ होगा। |
| --- | --- |

| धनु | लग्न कहता है कि हर वर्ष आपकी किसी न किसी प्रकार की हानि होती रहती है। आपका आग्नेय दिशा में किसी मित्र के साथ वस्त्र के कारण विवाद हुआ। इसलिये मित्र के घर से प्रेत का कोप और मित्र का क्रोध लगता है, जिससे आपकी हानि होती है। मित्र को संतुष्ट कर प्रेत को भगा दें, तब आपको शांति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| मकर | लग्न कहता है कि पितृदोष है और दक्षिण दिशा से मित्र के घर से प्रेत का कोप दिखता है, जो कि स्त्री के साथ चलता है। पितृदोष भी किसी स्त्री का है जिसके निवारण हेतु आपने पहले भी उपाय किया था। वह कार्य आपने शुद्ध मन से नहीं किया, इसलिये आपके घर में पीड़ा रहती है। बार-बार परिवार में बीमारी आती है। ब्राह्मण से गृह में पूजा करवाएँ व हवन करवाएँ। मित्र के साथ समझौता करें और पितर का तीर्थ में जाकर पिण्डदान करें। गंगा में स्नान करें। प्रेत को भगाने का उपाय करें। देवता की पूजा करें। तब आपके परिवार में सुख और शांति होगी। |
| --- | --- |

| कुम्भ | लग्न कहता है कि शंखनी (डाकिनी) का दोष है। ब्राह्मण के साथ भी आपकी शत्रुता है। आपके परिवार में कोई व्यक्ति पेट पीड़ा से दुःखी रहता है या मर गया है, घर में भूत का कोप इसका कारण है। उपाय करके भूत को भगाएँ, अपने कुलदेवता की पूजा करें। तब आपको सुख-शांति प्राप्त होगी। |
| --- | --- |

| मीन | लग्न कहता है कि आपके परिवार में किसी को पीड़ा या बिना बीमारी के किसी को कमज़ोरी महसूस होती है। राजदरबार में भी आपका किसी के साथ झगड़ा चला है। उसके शाप से भी आपको दुःख पहुँचता है और पीड़ा रहती है, ऐसे लक्षण दिखाई देते हैं। जिसके साथ आपका विवाद है, उसे आपने झूठा वचन दिया इसलिये आपको उसका शाप लगता है। उसके साथ समझौता करें। अपने इष्टदेव को मनाएँ तो सुख-शांति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 1 | मंगल ग्रह यह कहता है कि भूमि का लाभ होगा और उसी भूमि से इष्ट (भूत) लगेगा। आपके परिवार पर इस भूत का प्रकोप होगा, अतः इस भूमि की शुद्धि करवाएँ। पूजा, जप, होम आदि करवाएँ, तब यह भूमि रास आएगी। किसी प्रकार की हानि नहीं होगी। |
| --- | --- |

| 2 | नारायण देवता कहता है कि तुझे देवता का दोष है। आपके परिवार में किसी स्त्री को पीड़ा रहती है। आप अपने कुलदेवता की पूजा करें, तब स्त्री को शांति मिलेगी और आपके सभी कार्य सिद्ध होंगे तथा लाभ प्राप्त होगा। |
| --- | --- |

| 3 | सहदेव कहता है कि आपके घर में किसी ब्राह्मण का पितर है, जिसके कोप से आपको पुत्र सुख नहीं मिलता। पितृपूजा करें तब पुत्र लाभ होगा। आपके मन को शांति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 4 | चौंसठ योगिनी ऐसा कहती हैं कि आपको जो शारीरिक पीड़ा है वह आकाश देवी के कोप के कारण है। एक छिद्रा (भूत) का कोप भी है। इनकी शांति के लिये पूजा करें, तब सुख प्राप्त होगा और लाभ मिलेगा। |
| --- | --- |

| 5 | चन्द्रदेव कहता है कि आपके घर पर देवता का कोप है। इसलिये चन्द्र का शुद्ध मन से व्रत करें और चन्द्र देवता का मनन करें, तब देह को शांति मिलेगी और लाभ होगा। |
| --- | --- |

| 6 | आदित्य देवता कहता है कि आपको पुत्र का वियोग है। आप पुत्र वियोग से चिंतित हैं। पुत्र प्राप्ति के लिये सूर्य देवता का व्रत करें व सूर्य की पूजा करें, तभी पुत्रलाभ होगा। मन की चिंता दूर होगी और कार्य सिद्ध होंगे। |
| --- | --- |

| 7 | भूमिदेव कहता है कि आपके घर पर भूत-बेताल का कोप है। |
| --- | --- |

| 8 | इसके निवारण के लिये भूत-बेताल की पूजा करके इन्हें भगा दें, तभी कार्य पूर्ण होंगे और परिवार में सुख और शांति होगी। |
| --- | --- |

| 9 | बुध ग्रह कहता है कि आपके परिवार में किसी व्यक्ति को पीड़ा है। यह देवी और छिद्रा का कोप है। आप देवी और छिद्रा की अन्न से पूजा करें, आपको लाभ होगा और शांति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 10 | वीर देवता ऐसा कहता है कि आपके घर पर किसी ने टोना किया है और डाकिनी का भी कोप है। इसके निवारण हेतु अमावस्या के दिन आटे की बकरी बनाएँ और चार बत्ती वाला दीपक जलाकर टोने और डाकिनी के प्रभाव को समाप्त करें। गृहशुद्धि के लिये हवन करवाएँ, तब सुख मिलेगा। |
| --- | --- |

| 11 | शनि ग्रह यह कहता है कि आपके घर की भूमि के साथ की भूमि पर भूत का वास है। उसी भूत का आपको कोप लगता है। अपनी भूमि और उस भूमि के बीच में सीमा डालें। आटे की बकरी बनाकर काला रंगें और भूत को उसकी बलि दें, तब आपको सुख और शांति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 12 | राहु देवता कहता है कि आपके परिवार में मशाण (श्मशान का भूत) का कोप है। आप अपने घर में पूजा करवाएँ तभी आपको शांति प्राप्त होगी और पुत्रलाभ होगा। |
| --- | --- |

| 13 | केतु ग्रह ऐसा कहता है कि गुरु के शाप के कारण आपको शारीरिक कष्ट मिलता है। जो कार्य आप कर रहे हैं, वह कार्य आपने अशुभ मुहूर्त में आरम्भ किया है, इस कारण कार्य करते हुए आपको पीड़ा हुई। पूर्व दिशा में जो आपका कुलदेवता है, उसकी पूजा करें और नवग्रह की पूजा करें तब सुख और शांति मिलेगी। |
| --- | --- |

| 14 | नृसिंह देवता कहते हैं कि आपके घर पर भूत-बेताल का कोप है। वह आपकी हर प्रकार की हानि करता है। इस कारण परिवार में अशांति रहती है। उत्तर दिशा में लाल वस्त्र सहित पूजा करके, आटे का मेढ़ा बनाकर बलि दें, तब आपको अन्न |
| --- | --- |